अन्नाराम सुदामा

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

उत्सुक गाधी उदास भारत पुस्तक एक काल्पनिक यात्रा सस्मरण है। इसम गाधी शताब्दी के अवसर पर देख भारत की सही—और सच्ची व्याक्रिया है—साथ म बापू का इसी अवसर पर एक सदश भी है—पत्र के रूप म। पुस्तक फरवरी १९७० तक आपके हाथा म होनी चाहिय थी—परन्तु किन्ही विशष कारणा से अब आपके हाथा म है।

—प्रकाशक

उत्सुक गाधी
उदास भारत

१

रघुपति राघव राजाराम' की धुन म तल्लीन बापू ने जब आखें खोली तो सामने वीणापाणि देवर्षि को मुस्कात देखा। प्रात कालीन मन्द समीर के साथ उनका क्रीडाकुल कौशेयाम्बर बडा भला प्रतीत हो रहा था। हल्के रक्ताभ स्मित अधरो के नीचे विरल दन्तपक्तिया की कुछ कोरें लग रही थीं मानो प्रवाल पिष्टी के कदम से भरी सीपी के अर्द्ध खुले किनारो पर साभ मोती अनायास उभर आए हो। घनी कुन्तल राशि कन्धो से कुछ नीचे तक मानो सुषुम्ना से सहस्रार तक जाने वाले रहस्यपूर्ण राजमार्ग की रक्षा कर रही हो। एक हाथ म वीणा और दूसरा आशीर्वचन के लिए स्वाधीन देश के नागरिक की तरह मुक्त था।

अहो भाग्य! देवर्षि का शुभागमन हमारे लिए सौभाग्य का सूचक हो। बापू खडे हो गए उनके प्रलम्वबाहु अभिवादन के लिए उठे और एक सरल मुस्कान उनके अधरो पर दौड गई, स्वच्छ पुष्करणी म तैरती नन्ही सुकुमार मछली की तरह।

सभी का मगल हो महात्मन।' देवर्षि न सुखासन पर बठते हुए सहज मदुवाणी म प्रत्युत्तर दिया।

'कहिए ऋषिवर! सहसा यह शुभागमन किधर से हुआ?'

'भूलोक से।'

'कहिए वहा के समाचार मानवी सृष्टि कुशल तो है?' कहन के साथ-साथ बापू के मुख छवि जल म क्षणभर के लिए अनेक उत्सुक मछ लिया उभरी और तुरन्त तिरोहित हो गइ।

देवर्षि ने उनकी ओर देखा और उनके नेत्रो म तरती जिज्ञासा के मौन-

महीन अक्षर सहज ही मे पढ गए, साक्षात्कार लेने वाले चतुर अधिकारी की तरह। बोले 'भूलोक का कुशल मंगल सुनने की उत्सुकता है?"

'हां भगवन्!'

'ममता है?'

'नही भगवन् मानव मात्र का मंगल साधना (सर्वोदय सिद्धान्त) स्वभाव की धरती पर उगा हुआ है कभी सहसा मिटाया नही जा सकता। दूसरा दिव्य लोक की आबादी भूलोक के कुशल मंगल मे ही है इसलिए।

पर महात्मन! मैं तो आपके लिए एक विशेष समाचार लाया हूं।'

'भगवन! वह?'

भारत मे आपकी जन्मशती मनाने का आयोजन बड़ी धूमधाम से हो रहा है।

'मेरी जन्मशती?'

'हां उसके लिए महीनो पहले विज्ञापन के ढोल बजे। जन सरकार द्वारा आपके सर्वाङ्गीण जीवन की अनेक सम्मोहक रूप रेखाए तैयार की गई हैं। स्थान स्थान पर प्रभात फेरिया, गांधी दर्शन प्रदर्शनियां सभाए, कवि सम्मेलन, पत्र पत्रिकाओ के भव्य विशेषांक रेडियो प्रोग्राम, जुलूस और आपकी उपलब्धियों से सम्बन्धित भाषण मालाए आपकी प्रतिमाओ के अनावरण बहुत कुछ।

'इतना?'

'इतना ही नही, आपकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने, सिक्के और डाक टिकट भी जारी किए हैं।'

'लेकिन इन सबसे मेरा क्या सम्बन्ध?'

'आपका सम्बन्ध यही कि आप अपनी प्यासी नयन शफरियो को उस अगाध गांधी छवि मे अवगाहन करने दें।'

'अपनी प्रशंसा के गीत स्वयं सुनूं मैं आत्मश्लाघा मे इतना राग द्वेष! कल्याणकारी नहीं दीखता। मेरी अनासक्त साधना का उपहास नहीं है यह?'

'निरवलम्ब महात्मन्! अक्षरश सत्य है आपका कथन! कथन मे मल मे कहीं अस्पष्ट प्रमाद हुआ है मुझसे पर अभिप्राय मेरा दूषित नहीं

है। आपने जिस अनवरत साधना से जा राज माग प्रशस्त किया था कम से कम, इक्कीस-बाईस वष बाद आप देखेंगे कि धरती के लोग, भारत के विशेषत, उस पर किस द्रुतगति से बढ रहे है। उनका कल्याण देखन मे सन्त स्वभाव ज्य आत्मतोष आपको अनायास ही मिल सके तो मैं सम झता हू कोई आसक्ति आपके विराग को दूषित नही करती।

दूसरा ममतामयी मातभूमि के लिए तो आपके प्राण प्रिय स्वय राजा-राम ने कहा है जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी उस दशन से निस्सदेह, आपकी श्रद्धा का पुनकल्प होगा सद्य टप रिकाड की हुई स्वर लहरी की तरह और होगा सतोष साकार आपका किसी चलचित्र के नाचते पात्र की तरह।

देवर्षि! आपकी साधु वाणी के भाव पर सचमुच मेरा मानस परितप्त होने को उत्सुक है। मा की जिस अहैतुकी कृपा कोर जो पच भौतिक था आज जिस अनवचनीय आनन्द मे जी रहा हू उस मा से अनुपक्त कमे हाऊ मैं? सचमुच उसके पद रज के एक कण स्पश का ही लाख लाख दिव्य लाकों से बढकर मानता हू मैं। जिस पर आपका आग्रह कितना अहाभाग्य मेरा मणिकाञ्चन सयोग की तरह।

धन्य हो बापू! मा के प्रति आपका निश्छल राग और अपने प्रति अराग। अत्यन्त प्रसन्न हू आपकी सहज निष्ठा पर ऐसी ही आशा थी आपसे।

बापू कुछ रुककर बोले 'मात भू दशन के साथ साथ विश्वगोलक पर उछलती कूदती मानवी आकृतियों मे ईश्वरीय प्रकाश और उसकी मनोरम कारीगरी देख कृतकृत्य हो उठूगा मैं। देवर्षि! आप जानते ही है ईश्वरीय प्रकाश किसी एक ही राष्ट्र या जाति की सम्पत्ति नही है।'[१] इसीलिए मुझे उसकी सारी सजीव सम्पत्ति स प्यार है।"

'साधूक्तम आपका ईश्वर एकदेशीय नही तभी तो आपने कहा था, ईश्वर न काबा मे है न काशी म है। वह तो घर घर म व्याप्त है हर दिल में मौजूद है।"[२]

---

१ १९ ६ २४ यग इडिया हिन्दी नव जीवन २८ ६ २४ प २३
२ यग इडिया हिन्दी नव जीवन १ १ २८ प० १९७

उस धरती के स्वर में स्वर मिलाकर मैं नाच उठूंगा। अहा, मेरी यह पुनर्यात्रा ह्वेनसांग और फाह्यान से भी ज्यादा सरस होगी।

'स्नान कर लिया बापू ?" देवर्षि ने सहसा मृदुवाणी से कहा।

बापू आशय समझ गए, बोले, हां।

आनन्द आया ?

'उसकी आर्द्रता की शीतलता से मेरा रोम रोम प्राणवान हो उठा उत्सुकता में यह स्वाभाविक ही था, देव !'

'पर उत्सुकता में जितना मिठास होता है उसके बुझने पर शायद ऐसा न हो।'

'हो सकता है भगवन् !' बापू क्षणभर रुककर बोले।

ऋषिराज ! मिठास विठास तो मैं जानता नहीं लेकिन एक महान उपकार अवश्य होगा मेरा वहां। एक अधूरी लालसा जो आज भी मेरे हृदय में अन्तर्व्रण की तरह चिपकी हुई है उसका शमन होगा। मैं विगत कल्मष हो गंगाजल हो उठूंगा।

"लालसा की पीड़ा—और वह भी आपके ?"

'हां देव ! कह तो दिया था—किया नहीं। कथनी और करनी में भेद मुझे पसन्द नहीं। जहां वाणी और मन में एकता नहीं, वहां वाणी केवल मिथ्यात्व, दम्भ शब्दजाल है। [1]

'ऐसी कौन-सी लालसा थी आपकी ?

'भगवन यह करने के बाद ही बता सकूंगा आपको।

"इनकी ऐसी क्या लालसा हो सकती है ?" देवर्षि एक बार असमंजस में पड़ गए। बोले, तो चलें फिर ?" और तभी वे दोनों आकाश मार्ग से देव दुर्लभ वसुंधरा की ओर चल दिए। 'भिवानी से प्रस्थान दिव्य नाक का जयघोष उन्हें एक बार सुनाई दिया और धरती की सुखद कल्पना में उनकी गति और तेज हो गई।

---

१ गांधीजी और उनके सपने पृ० ४७

२

धरती पर पर रखते ही सबप्रथम बापू ने मा की पावन रज अपने मस्तक पर लगाई और उसके छवि विग्रह म इतने भावविह्वल हो गए कि अपने आपको कुछ क्षणो क लिए विस्मरण कर बठे ।

मेरी मा ! मेरी पावन धरती अहा ! मरी इसमे मेरा कोई क्षुद्र और सकुचित मोह तो नही ? राग व जन है । नही नही बिलकुल नही । मरी देश भक्ति कोई एसी एकान्त वस्तु नही है । वह सब व्यापिनी है । 'मुझे उस देश भक्ति का त्याग करना चाहिए जो दूसरे राष्ट्रो को आफत मे डालकर उन्ह लूटकर बडप्पन पाना चाहती है । यही नही मेरा धम और तज्जन्य मेरा देश भक्ति सब जीवन व्यापिनी है । मैं केवल मानव प्राणियो स ही भाई चारे का सम्बध जोडना— उसका अनुभव करना चाहता हू'[1]—और यह इस धरती स प्रसार पा सकता है । मैंने अच्छी तरह स पढा ह विद्यार्थी जीवन म एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद अग्रजन्मन स्व-स्व चरित्र शिक्षेरन पृथिव्या सव मानवा ।[2]

रात्रि के साढे आठ बज होग । नीम के दो सघन तरुओ के पास व खडे थे । सामने राज माग गुजरता था जिस पर यदा कदा कोई ट्रक पदल या साइकल सवार दिखाई दे जाता था । राज माग के दोनो ओर मक्के और बाजरे के खेत थे । कभी कभी पवन के मन्द झोके के साथ वे डली अचानक काप उठती थी सशकित मन की तरह और फिर झुक

---

१ य इ डि० म० जी० ४ ४ २९ पृ० २५८
२ मनुस्मृति

जाती था अहंकार हीन अहं की तरह।

सहसा धीमे से बापू बोले 'देव ! यह पावन धरित्री पंजाब की होनी चाहिए।

देवर्षि मुस्करा दिए। 'क्या भगवन् ?

संशय हो तो टाल दिए सामने आते उस भद्र जन से और पूछ लें।'

'क्या भाई ! यह धरती पंजाब ही है न ?'

'आप लोग कहीं बाहर से आ रहे हैं महात्मन ?' भद्रजन ने बड़े विनीत स्वर से कहा।

हां भाई।

यह हरियाणा राज्य है भगवन !

हरियाणा राज्य ?

हां।'

बेटे ! हरियाणा तो हम थे तब भी था अब भी है ही पर हरियाणा राज्य कब से हो गया ?

'आप कितने वर्ष बाद पधारे हैं यहां ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साढ़े पांच महीने बाद ही हम चले गए थे यहां से।'

इतने दिन फिर किस दुनिया में रहे आप ?'

साधुओं की कोई दुनिया नहीं बेटा ! और सभी उनकी है।

'तब तो यहां सभी कुछ विलक्षण और विसंगत दीखेगा आपको। कैसे ?'

स्वतन्त्र होने से लगाकर और आज तक इतिहास की इस लघु अवधि में—इस विशाल भू खंड में जितना आंतरिक परिवर्तन हुआ और हो रहा है, उतना सदियों के इतिहास में भी शायद नहीं हुआ होगा।'

तो लोग देश की समृद्धि में इतने व्यस्त हैं ?'

समृद्धि में नहीं समृद्धि के पर काटने में।

'पर काटने में !'

'हा ! '

हे राम ! क से भैया ?'

कसे क्या ? विभाजित पजाब का फिर विभाजन हरियाणा। हिमालय की हरी भुजा के नीचे सोए असम स नागालण्ड और फिर पहाडी राज्य मेघालय आन्ध्र म तलागना की अलग माग और न मालूम कैसी-कसी विद्रोही विवेकहीन विषाक्त आवाज़ें निकल रही है विलगता की। क्षेत्रीयता का घातक विष इस विशाल राष्ट्र पुरुष के युवा शरीर म इतनी तेजी से फल रहा है जिसकी कोई सीमा नहीं।

'असाध्य होने पर बाबा ! सिवा पश्चात्ताप क और कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा।

तो इस रोग के प्रसार का कारण क्या है भाई ?

"मूल तो गाधीवाद और उनके अनुयायी ही समझो।'

लेकिन गाधी न तो एसा नही कहा था।

ता क्या कहा था उन्होने ?" युवक कुछ उत्तेजित होकर बोला।

'उस बेचारे न तो स्पष्ट कहा था सच बात तो यह है कि आपको गाधीवाद नाम ही छोड देना चाहिए, नही तो आप अन्ध कूप म जाकर गिरेंगे। वाद का तो नाश होना ही उचित है। मर मरने के बाद मरे नाम पर अगर कोई सम्प्रदाय निकला तो मेरी आत्मा रुदन करेगी।[१]

और प्रान्तीयता के विष के सम्बन्ध म भी तो उस गरीब न हृदय से कहा था कि हम प्रान्तवाद भी मिटाना चाहिए। यदि आन्ध्र वाले कह कि आन्ध्र आन्ध्र के लिए है उत्कल निवासी कहे कि उत्कल उत्कल वासियो के लिए है तो इस तरह काफी प्रान्तीयता आ जाती है। सच तो यह है कि आन्ध्र और उत्कल दोनो को देश और जगत के लिए कुर्बान होन के लिए तयार होना है।[२]

युवक बापू के मुह की ओर देखने लगा। थोडा रुककर बोला, लकिन बाबा उनके अनुयायी ता सभी अधिकाश क्या समझा सण्ट

---

१ मानिवान्दा २२ २ ४०

२ गाधी सवा सघ सम्मलन डलाग २५ ३ ३८

परमण्ट[1] ही पूरे पहुंचे हुए महापुरुष हैं।

बापू कुछ हंसे बोले 'खाए सूअर, पीटे जाएं पाड़े'[2] उस गरीब का बदनाम करो तो तुम्हारी मौज है भाई, पर अनुयायियों के विषय में उस बेचारे का कथन तो यह था कि 'लोग चाहे जो कहे सेवा का तो कोई सम्प्रदाय नहीं बन सकता। वह तो यह सबके लिए है। हम सबको स्वीकार करेंगे। सबके साथ चलने की कोशिश करेंगे। मेरे पास कोई अनुयायी नहीं। हम सब साथ-साथ हाथ बन्द चल रहे हैं।'[3]

शासन के खिलाफ विवेक रहित विरोध चलाया जाए तो उससे अराजकता की अनियन्त्रित स्वच्छन्दता की स्थिति पैदा होगी और समाज अपने ही हाथों अपना नाश कर लेगा।[4]

'इसमें गुप्त या प्रकट अथवा मन वचन और कर्म किसी भी प्रकार से हिंसा का समावेश नहीं। यह क्रोध या द्वेष का परिणाम नहीं होना चाहिए।'[5]

यह तो अनुशासनहीनता और एक प्रकार से सरकार का असहयोग हुआ पर इस प्रकार असम्मानपूर्ण उपायों द्वारा कोई सम्मानपूर्ण परिणाम नहीं निकलता।[6]

तुम कहते हो वे सत्याग्रह नहीं बटा ! वे दुराग्रह हैं। आत्मग्राह भी आत्महत्या जैसी कोटि में ही आते हैं। बापू चुप हो गए।

सहसा देवर्षि बड़े मृदु स्वर में बोले, युवक ! माग से मन नहीं भरा आज तक किसी का। विभाजन किसी देश या प्रान्त के सुख का सही हल नहीं है। द्वन्द्व तो दुःख है बन्धु।

लेकिन एक बात तो आप मानेंगे बाबा कि राष्ट्र के विभाजन

---

१ पाप प्रतिशत

२ भैंसे

३ गांधी सेवा संघ सम्मेलन मालिकान्दा बंगाल २२ २ ४०

४ यंग इण्डिया २ ४ ३१

५ हरिजन सेवक २८ ४ ३९

६ यंग इण्डिया ५ १ २१

की इस घुट्टी का समारम्भ ता गाधी स ही हुआ और वह कुसस्कार अब राष्ट्र की समस्त चेतना म इतना प्रबल हो गया है कि गाव और शहर जसी इकाइया भी अपना विभाजन चाहती है वयक्तिक स्वाथ भूमि पर।

'घुट्टी का मतलब तुम्हारा भारत विभाजन से है न ? '

हा बाबा।'

"अरे नाई ! उस गरीब की सुनो विमन। वह तो स्पष्ट कहता था कि मेरी लाश के टुकडे हा सकते हैं पर भारत माता के विभाजन की तो मैं कल्पना ही नहीं कर सकता। फिर भी हुआ जो नही हाना चाहिए था। किसी की भूख और महत्वाकाक्षाओ के नीचे, बचारे की आवाज कुछ उभर कर अवश्य दब गई पर *बुझी नहीं।* फिर भी देखो विधान प्रकृति का उस गरीब का अन्न भी तुम समझो कुछ वसा ही हुआ जसी उसकी कल्पना थी। आखिर था वह इकाई ही, जो रहा था सम्पूणता क लिए। उस देन विभाजन म घसोटना एक नतिक अपराध है, बेटा !

युवक मन्त्र मुग्ध सा सुन रहा था। अब धीरे से बोला, बाबा ! आप लोग पढे लिखे मालूम पडते हैं और शायद गाधी साहित्य पर आपका अच्छा अधिकार है। मेरा तक आपके सहज विवेक से अपनी जडता खोकर विकास चाहता है। यदि कुछ और पूछ आपसे ता अभद्रता ता नहीं होगी ?

हा भाई अवश्य पूछो, हम साधुओ को तो जिज्ञासु ही चाहिए पर हो वह सही। हमारे समाधान म यदि किसी का परमाथ सिद्ध होना है ता हम अवश्य ही जनवान ह।

आपने जो कुछ कहा ठीक है बाबा, लेकिन सत्याग्रह की बीमारी ता गाधी की ही देन है या नहीं ?

दोनो ही महात्मा एक साथ हस पडे।

बापू बोले इससे क्या हानि है भया ? '

'ज्यादा दूर की जाने दीजिए बाबा, पजाब और हरियाणा की ही सुन लें। चडीगढ—राजधानी एक। दुविधा, एक औरत के दो दाव

दारा की तरह। पजाबी (सिक्ख) कहते हैं हम नहीं मिला तो सत्याग्रह कर देंगे और हरियाणी कहते हैं हम उसके लिए मर मिटेंगे। कोई कहता है आत्मदाह कर लेंगे कोई कहता है जहर खा लेंगे—जल म डूब मरेंगे भला यह भी कोई बात हुई ? आए दिन नापन प्रदशन और पथराव। बीमारी का अत भी है कहीं ? बापू बोले देखो बेटा बद नामी का कीचड बेचारे गाधी पर उछाला तो मर्जी तुम्हारी उसका उद्देश्य तो ऐसा कहीं नहीं था।

उसने क्या कहा बताऊ तुम्हे ?

हा बाबा।'

उसने कहा था बेटा। मेरी यह दृढ धारणा है कि उसम (सत्याग्रह) विनय और अहिंसा की विशिष्टता का दावा किया जाता है वह यदि दूसरो को धोखा देने के लिए ओढ लिया गया भूठा आवरण मात्र हो तो वह लोगो को गिराता है और निन्दनीय बन जाता है। [१]

बापू की आखो स दो अश्रुकण निकले और उजली निर्मल रेत म लीन हो गए। न युवक ही देख पाया और न दर्पण ही।

द्रवित बापू केवल इतना ही कह सके कि हमारे देश की बद किस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान नाम स जो दो टुकडे हुए उसम धर्म को ही कारण बनाया गया है [२]

बाबा मैं बडा आश्वस्त हू आप लोगो क वचनामृत स। मेरा गाव यहा से दो मील है आप लोग वहा रात भर विश्राम कर मुझे उपकृत होने का लाभ दें युवक ने सत्श्रद्धा स कहा।

बापू बोले हम बेटा राजधानी जाना है कितनी दूर है यहा स वह ?

दिल्ली ?

हा।

होगी बीस बाईस मील करीब। यह सडक सीधी वहीं जाएगी।

---

१ यग इण्डिया १५ १२ २१
२, हरिजन सेवक २६ १ ४७

"अच्छा !" व दोना उस सडक पर धीरे धीरे अधकार म ओझल हो गए।

'दर्वाष ! आसारा मे प्रतीत होता है कि देश मे पैसा पदलोलुपता और स्वाथ से चिपका हुआ विघटन जोरा पर है। दश के भाग्य की बाग डोर असयम और उत्तेजना के अनभ्यस्त हाथो म है। भगवन ! इसका अन्त ?'

अन्त, अपनी चरम सीमा पर पहुचकर हागा ही इसका। काल किसी पर कृपा नही करता। दश को एक बार अधकार म डाल अवश्य देगा, लकिन कुछ जागरुक शक्तिया भी ऐसे समय म सवथा निष्क्रिय नही रहगी बापू !

'हे राम ! सबका सम्मति दे भगवान्।

३

बापू ! सूर्यास्त होने को है पहले थोडा उधर चलें जिधर देश का शासक वग रहता है ।

भगवन ! अच्छा होता कहीं गावा की ओर चलते । उधर एक बार मैं उन दीन दुखिया के साथ तदाकार होना चाहता हू ।"

इसलिए कि आप महात्मा है ।

आप जो कुछ कहे शिरोधाय है भगवन ! पर जब मैं सशरीर इस धरती पर विचरण करता था तो स्पष्ट कहता था कि—

महात्मा शब्द से मुझे बदबू आती है । फिर जब कोई इस बात का इसरार करता है कि मेरे लिए महात्मा शब्द का प्रयोग किया जाय तो मुझे असह्य पीडा होती है मुझे जिन्दा रहना भार मालूम होने लगता है मैं अल्प प्राणी हू—महाप्राणी नही । अभी मेरे अन्दर शुद्धता प्रेम विनय विवेक की खामी है । अपनी तारीफ सुनकर मैं यह नही मान लेता कि मैं उस तारीफ के लायक हू । २

मतलब आपको अपने लिए महात्मा नाम रुचिकर नही लेकिन मैं तो महात्मा समझता हू जो आपकी चेतना म जय की तरह जुडा हुआ है नाम म नही और जो है हर चेतना म अनुभव गम्य ।

आगे आगे मौन हू भगवन् ! जिधर भी ले चलें तत्पर हू ।

मेरा आशय है जब यात्रा पर निकल ही पडे तो देश का एकाकी

---

१ हिन्दी नवजीवन ७ ६ २४

२ वही

दर्शन ही क्या ? अधिकतम का प्रयास करें।'

बिल्कुल ठीक।

'देखिए ये लम्बी-चौड़ी साफ सड़कें और ये सुघड़ आवास, आगे जिनके हरी दूर्वा हंसते फूल जगमगाती विद्युत् कारें रेडियो टेलीफोन और सजग सन्तरी तथा इन जन सेवियों के सकेता पर कठपुतलियों से नाचते नौकर। ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी इस परिसी दुनिया में कोई गरीब है ही नहीं लेकिन बापू! इधर-उधर बड़ी तेजी से चक्कर काटती चिंतित मोटरें चेहरे पर किसी के शान्ति सुख और आत्म तोष की आभा बिल्कुल ही नहीं क्या क्या ?' इतने बड़े देश की सुख-सुविधा की अनेक चिन्ताएं सताती होंगी इन्हें बापू ने स्वाभाविक अनुमान से कहा।

इतने में एक भद्र वृद्ध उधर से आता दिखाई पड़ा। देवर्षि ने धीमे से पूछा 'क्यों भाई, आज मोटरों में यह चिन्तातुरी सरगर्मी कैसी ?'

'बाबा क्या बताऊं आप लोगों को कम या ज्यादा यह राज यों ही चलती रहती है। समझ लो आप देश में दाव पेच का सबसे बड़ा अखाड़ा यहीं खुला हुआ है। दिन रात ये लोग चित पुट में लगे ही रहते हैं। हरएक को एक ही चिन्ता है, कुर्सी कैसे रहे ? रूठना मनाना मिलना मिलाना, काय स्थगन अविश्वास प्रस्ताव और वाक आउट, घात प्रतिघात चलते रहते हैं। और काम ? सिवा घर भरने और भाषण के कुछ नहीं।

इन्हें क्या दीन दुखियों से क्या किसी के मिटने-लुटने से ?

मर मिट गया कोई दंगा फिसाद में—दुर्घटना में तो ज्यादा से ज्यादा शोक-संदेश संवेदना बस हो गया वक्तव्य। इनको तो एक ही आग रहती है कि अपना उल्लू सीधा कैसे हो इसी में घुलते रहते हैं बेचारे। देश की आंख में धूल झोंकते है और खुद की आंख का बचाव चाहते हैं और बात करने में आईन की तरह आगे रखते हैं गांधी को।

'भाई! ठीक कहते हो पर अतिशयोक्ति भी असत्य है।'[1]

---

[1] हरिजन सेवक १७ ३ ३३

सरकार को कोसना, उसे गालियां देना फिजूल है। सरकार तो लोक जागृति के नाप का औजार है।'[1] तिस पर भी बेचारा गाधी तो कहता था कि, 'मैं देश की आख मे धूल नही झोकूगा। मेरे नजदीक धर्म विहीन राजनीति कोई चीज नही है।'[2] तुम कहते हो गाधी को ये लोग आगे रखते हैं और मैं कहता हू गाधी गरीब को इन्होने पीछे छोड दिया है।"

आप लोग भी मुझे गाधी के अन्ध भक्त मालूम पडते हैं। राष्ट्रीय जीवन ध्वस्त होते खण्डहर की तरह लुप्त हो रहा है नहीं देखते आप ? चरित्र की चिडिया पख हीन होकर छटपटा रही है। कहते कुछ करते कुछ हैं। यह भी कोई शासन प्रणाली हुई, क्या कहा था आपके गाधी ने इस पर ?' वृद्ध ने कुछ उत्तेजित होकर पूछा।

'यही कि यह प्रणाली राष्ट्रीय जीवन की गन्दगी पर जीवित रहती है। उससे अपने लिए पोषण सामग्री ग्रहण करती है।'[3] और उस गरीब ने तो यह भी कहा था महाभाग ! कि भाषणो से और भाषण करने वाला से डरना उनसे दूर रहना अच्छा है।'[4]

बाबा ! मेरी कुछ आशिष्ट उत्तेजना क्षम्य हो।

'नही भाई एसी कोई बात नही हम गाधी के प्रचारक नही हैं। हमने तो उसकी कही हुई को ही कहा है। किसी के वैभव के मिथ्या गीत गाना गरीब गाधी को कभी प्रिय नही था। उसका कहना था, कम स कम मेहनत करके दुनिया के सब लोग एक समान व अच्छे से अच्छा जीवन बिताए इस आदर्श के लिए यत्न करना माना आकाश के फूल तोडना है समष्टि के लिए एक अमर्यादित जीवन की कल्पना नही की जा सकती। जब सब मर्यादा छोड दी जाए तो आदमी ठहरेगा कहां जाकर ?'[5]

---

१ हिन्द नव जीवन १३ ४ २४
२ गान्धी सेवा आश्रम २६ ११ २८
३ यग इंडिया हिन्दी नव जीवन १४ ६ २८
४ नवजीवन २२ ५ २८
५ सेवाग्राम ६ १ ३० ६ म० १६ १ ४०

बाबा मरी उत्तजन धरती आद्र है उसम अब श्रद्धा का बीज जम रहा है—धय हा आप। सत्सगति किन करोति पुसाम। कृपया चलें उस तरफ जहा वह हरी दूर्वा का प्लाट है।

देवर्षि बोले नारायण! सत और सलिल वन्त ही भले कल्याण हो तुम्हारा कहते हुए वे दिल्ली की घनी बस्ती की ओर चल दिए।

४

इक्के दुक्के लोग कहीं जा रहे थे, मालूम हुआ गाधी दशन गोष्ठी है वहा। सुदर फ्रेम म जड़ी गाधी का बडा चित्र बत की एक कुर्सी पर जचा हुआ था। सूतीआल्यिाकी माला उसपर शोभायमान थी। शायद यह आयोजन किसी गाधी खादी सम्थान की ओर से था। मच पर बडा गद्दा और कई गाल ममनद पडे हुए थे। आदमी साठ सत्तर के भीतर ही थ व्यवस्था बैठन की हजार स ऊपर व्यक्तियो की थी। जो थे दो चार को छोडकर सभी पक्के पान और उनम अधिकाश एसे चीर हरण आयोजना का रचाने मे सिद्धहस्त खिलाडी थे। वक्ता दान्तीन भाडे के माइक की तरह सामन बठे थ। एस आदमियो की जीभ पर सभी तरह के टप रिकाड रहते हैं ना फरमाइशी गीतो की तरह चाहे जैस बजते रहत हैं। उन्हें न गाधी स मतलब न लनिन स। पनेवर होते है एसे लाग। पाच सात औरतें भी बठी थी—एक का छोडकर सभी रिटायड पर अह प्रदशन म जवानो क कान काटती थी।

एक काई बडा नता आन वाला था। लोग प्रतीक्षा म पलकें बिछाए थ। समय हो गया था पर सभापति की चयर अभी खाली थी प्रतीक्षा की घडियों की तरह। काई आध घण्टे के बाद एक सज्जन न उठकर कहा कि अभी अभी सूचना मिली है कि उनकी तबियत कुछ नरम है इसलिए उन्हान क्षमा चाही है साथ म गाष्ठी-सफलता की शुभकामना उन्हाने भजी है। एकाध दबी हुई पटपट की आवाज हुई और कुछ उभरन स पहले ही बाता की फुसफुस म खो गई सिगरट क धुए की तरह। एक फोटाग्राफर महाशय भी आए हुए थ इस समाचार

से झल्लाए हुए से चुपचाप इस तरह खिसके जैसे काई मिल मालिक घेराव वाला को देखकर।

औरतो म से एकाकी उस युवती को सभानेत्री बनाया गया। बूढ़ी तालियो की गडगडाहट इतनी जोर की हुई मानो उनम किसी टानिक का असर हा गया हो, पर बुढिया ने तालिया नही बजाइ—हाथ पर हाथ धर ताकती रही। उनका गम पारा द्वेष की नली म पर्याप्त ऊचा आया प्रतीत हा रहा था। वे तुरन्त वाक आउट कर गइ समद म विरोधी सदस्या की तरह।

दा युवा परस्पर बातें कर रहे थे पर गाधी ने तो कहा था स्त्री सहन शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। [1] और यह भी ता कहा था दूसरे न कहा, नम्रता का अथ है अहम् भाव का आत्यतिक क्षय। [2] पर किसने सुना गरीब गाधी का।

'और उपस्थिति यह जबकि शहरभर के माइक महा कर दिए।'

और पम्फलटबाजी ?'

समय और धन नष्ट करन का इससे बढ़कर और कोई हय माग नही विशेषशील वग क लिए और वह भी गाधी के नाम पर।

धीरे धीरे कुछ और लोग आ जाए तब तक एक सस्त स अमेरिका न शुरुआत की—पोरबन्दर म गाधीजी क जन्म स लकर उनकी पढ़ाई लिखाई और कस्तूरबा क साथ ब्याह-सगाई की सिहासन बत्तीसी म आध घण्टा लगा दिया और विलायत जान की बात शुरु कर दी। गाधी दशन पर बोलना है थकबी बाबा। अरे पाप लीला समटोग भी या नहीं ?

युवका ने दो-तीन आवाजें लगाइ और चल दिए। लोग उन या नहा गाधीजी स्वय उब गए इस नीरस कायक्रम स। उन्हान कहा 'दर्पोद ! ऐसी सभी औपचारिकता भयावह है इस क लिए—ल डूबगी उस।'

---

[1] हरिजन सेवक ७ ४ ३३

[2] यरवदा जेल ७ १ ,०।

बापू ! देश में जीवित राष्ट्रीय आदर्श का नितान्त अभाव है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः,

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।[1]

स्वयं मनीषी की दुरावस्था है तो जनसामान्य की बात ही क्या ?

हां भगवन्। युवकों के पीछे हो लिए वे भी और अल्प समय में ही एक सिनेमा घर के सामने जा पहुंचे।

मध्य विद्युत्प्रकाश था। रंग विरंगी ट्यूब लाइटें जगमगा रही थीं। अनेक लोग छविघर के आगे चहल कदमी कर रहे थे। दीवारों पर लगे एक्टर एक्ट्रेसों के पिक्चर सम्बन्धी पोज देखने में रत थे।

आसपास अधिकतर चुस्त मोहरी कीपैण्ट कोट टाई टेरेलिन के टी शर्ट धारी सजधार रंगीन साड़ियां और लिपस्टिक से पुते होठों की छवियां दिखाई पड़ रही थीं। जोड़े बेजोड़ सभी थे। अगले शो की प्रत्याशा में चर्चा कर रहे थे। कोई कोई अकेला ऐसे घूम रहा था मानो किसी सुअवसर की टोह में हो। बनी ठनी कुछ जवान लड़कियां भी इधर उधर हंसती पुलकती झांकती देखती फिर रही थीं। पान-बीड़ी सिगरेट चाय नाश्तावाले के ग्राहकों से तीन दुकानें इस तरह घिरी हुई थीं जैसे कुम्भ के अवसर पर टिकटघर की खिड़की यात्रियों से। इधर तो साइकिलें मोटरों की कतार लगी थी। खेल था वारिस मगर युवक युवतियां लावारिस की तरह घूम रहे थे।

सहसा देवर्षि बोले बापू ! यह दृश्य तो पेरिस को मात कर रहा है मालूम पड़ता है लोगों का स्टैण्डर्ड आपके जाने के बाद बहुत हाई हो गया है। बापू के उदास होंठ कुछ खुले फैशन की फिसलन बहुत तेज होती है ऋषि ! घाटी से ढलते हुए ग्लेशियर की तरह और अन्त होता है उसका स्वाभाविक। समझ लेना चाहिए कि पाश्चात्य लोगों के साधनों द्वारा—पश्चिमी देशों की स्पर्धा में उतरना अपने हाथों अपना सर्वनाश करना है।[2]

---

१ गीता

२ हिन्द नवजीवन ५.६.२६

देवर्षि ! फ्रेंच महिलाएं हर वर्ष डेढ़ अरब डालर अपने हुस्न पर खर्च करती है।[1] इससे उनके चरित्र में सुगन्ध नहीं आ सकती चमड़ा भले ही रंगीन हो जाय थोड़ी देर के लिए।

हां बापू जब अन्तर में विकास पाया हुआ सौन्दर्य आत्मा में अग्नि होता है तभी उसमें सुवास बिखरती है।'

यह सभ्यता नाशकारी और नाशवान है इससे बचकर रहने में ही कल्याण है।[2]

बापू ! बीड़ी और सिगरेट का धूमला जाल इस धरती की उठती पौध को ढक रहा है—नाशोन्मुखी यह सभ्यता खा जाएगी धरती का तरुणाई और गाधी के देश का ?'

जरा सी बीड़ी ! यह दुनिया का कैसा नाश कर रही है। बीड़ी का ठण्डा नशा कुछ अंशों में मद्यपान से भी अधिक हानिकर है क्योंकि मनुष्य उसका ताप शीघ्र नहीं देख सकता। उसका उपयोग असभ्यता में नहीं *गिना जाता बल्कि सभ्य कहलाने वाले लोग ही उसका उपभोग करते* रहते हैं।[3] यह कैंसर जैसी भयानक बीमारी का जन्म देती है।'[4] देवर्षि रही गाधी की बात, गाधी तो कहता था कि इस देश का हर आदमी यह महसूस करे कि यह उसका अपना देश है—पर अब मेरे

---

१ हुस्न की खातिर डेढ़ अरब डालर

पेरिस–२३ अक्तूबर (ए प्र) फ्रांस के रक्षा मन्त्री माईकेल डेब्रे ने कल बताया कि फ्रांस की सरकार अपने परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिवर्ष जितना धन राशि खर्च करता है उससे कहीं ज्यादा फ्रेंच महिलाएं अपने सौन्दर्य प्रसाधनों पर खर्च कर देती हैं।—फ्रांस के एक प्रवक्ता ने बाद में बताया कि फ्रेंच महिलाएं अपने को सुन्दर बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग एक अरब चालीस करोड़ डालर खर्च करती हैं। (नवभारत टाइम्स) से साभार।

२ बापू के बिखरे रत्न-कण (गाधी वाणी–रामनाथ सुमन से साभार)

३ हिन्दी नवजीवन ४ १ १२ ३६

४ यंग इंडिया १२ १ २१

नाम के दुरुपयाग की कहानी लम्बी है।[1] मेरे नाम पर असत्य का प्रचार हुआ है। मेरे नाम का दुरुपयोग चुनावों के समय किया गया है। मेरे नाम पर बीड़िया बेची जाती हैं मेरे नाम पर दवाइया बेची जाती हैं एक अंग्रेज लेखक ने कहा है कि जहा मूर्खों की जानकारियां की सख्या अधिक है वहा धूर्त धोखेबाज भूखो नहीं मरते। इस सत्य का किस न अनुभव होगा।[2]

सहसा लडकियो की छेड़छाड़ से तनाव खड़ा हो गया। उसी समय शा खत्म हुआ। भीड़ की भागीरथी बह निकली। छेड़ छाड़ करनेवाले उस भागीरथी में कहीं डुबकी लगा गए। लडकी की मा कह रही थी साला मिल जाए तो कच्चा चबा जाऊ। इतने में गाधी गोष्ठी में ऊब कर आनेवाले वेदाना युवक बात करते सुनाई दिए देखा, उस सभापति के बच्चे की तबियत नरम थी वह मोटर में जा रहा है।' दूसरे ने कहा पी भी रखी है उसने तो! गाधी का दुशाला ओढ़ने वाले ऐसे भेड़िया ने ही तो गाधी का सबसे अधिक अहित किया है।'

दर्शपि ने कहा बापू आधुनिक यूरोप के बच्चे—कालेजो के य छात्र बड़े उद्दण्ड हो गए मालूम पड़ते हैं आजकल।'

भगवन! इसमें कोई दो राय नहीं। वे तो पश्चिमी शिक्षा दीक्षा की एक निस्तेज और निष्प्राण नकल भर हैं। अगर हम उनको पश्चिमी सभ्यता का सोलहों या स्वाहो साव कह तो शायद वजन होगा।' लेकिन बात इतनी ही नहीं है।

तो?

लेकिन मुझे एक भी डर है कि आजकल की लडकियों को भी तो अनेक मजनुओं की लैला बनना प्रिय है। यह दुर्भाग्य का पक्ष

---

१ एक बार कमलनी गांधीजी के नाम का असत्य प्रचार व दुरुपयोग कर रहा थी इस पर गांधीजी ने यह लिखा था।

२ हिन्द नवजीवन २९ ६ २५

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी २१ १ ४३ हरिजन सेवक १ २ ४?

करती है। आजकल लडकी वर्षा या धूप स बचने व उद्देश्य से नही वल्कि लोगो का ध्यान अपनी ओर खीचने के लिए इस तरह के भड कीले कपडे पहनती है। वह अपने का रगकर कुदरत का भी मात करना और असाधारण सुन्दर दिखना चाहती है। यदि उन्हे मालूम हान लग कि उनकी लाज और धम पर हमला होने का खतरा है तो उनसे उस पशु मनुष्य के आगे आत्मसमपण करन की वजाय मर जाने तक का साहस होना चाहिए।[१] 'गुण्डे सिफ बुजदिल लोगो के बीच पनप सकत हैं।[२]

'अच्छा वापू यह ससार है सरकने दा इसे, जसे भी सरकता है।[३] अब चलें एक बार गाव की आर।

'हा भगवन्। और वे वडी तेजी से चल पडे।

---

१ हरिजन सेवक १ १२ ३८

२ सेवाग्राम ४६ १४० हरिजन सेवक ८ ६ ४०

३ सरति इति ससार

५

रात के बारह बज थ। कम्प की खाट पर नीरवता शन शन पाव फला रही था। मञ्च पर रोशनी थी। मीठी मीठी सर्दी पड रही थी। फुटपाथ पर कहीं-कहीं भिखमगे या अकाल से मत्राण पाने वाले थोरी चमार आदि निम्न वग क पीडित जन चियडा म दुबके पड थे। सुदूर पश्चिमी राजस्थान के भागा स आए हुए थ ये। वहीं दो दो इटें जिनम राख अभी पूरी तरह ठण्डी नहीं हो पाई थी। वही थाडी सी लकडिया छाणे। इटा के सहार खडा किया हुआ तवा उनका चूल्हा चौका नहा। औंधे किए हुए खारिए (एक प्रकार के चौकोर टोकरे) या काले-काले ढक्कनदार पीप बस उनके नीचे या उनम इनका सारा मालमत्ता।

गाधी बाबा द्रवित हो गए उन्ह देखत ही। बोल देवपि[1] चाहे जो कुछ हो जाए पर इन फटेहाल—इन नरकवालो को मैं नहीं भूल सकता—नहीं छोड सकता। इससे आप समझते हैं कि गाधी किस काम का आदमी है? इसलिए अपने प्रेमियों से मैं कहता हू कि आप मेरे प्रति यदि प्रेम भाव रखते हैं तो ऐसी कोशिश कोजिए कि देहात के लोगों को जिन्हे मैं प्रेम करता हू अन्न वस्त्र मिले बिना न रहे। इन दीन दुखियों को आप भजिए। मैं भगी के साथ भगी हो सकता हू ढेड के साथ ढेड होकर उनका काम कर सकता हू।" 'दृश्य ईश्वर क्या है? गरीब की सेवा।'[2]

---

१ हिन्दी नवजीवन ७ ६ २४

२ हिंदी नवजीवन ५ २ २६ प २ ६ महिला परिषद् के भाषण से।

देवर्षि बोले, 'बापू चलिए आगे एकान्त म विश्राम करें कही।'

और तब आप मुझे सुनाएगे वष्णव जन ता तैने कहिए जा जान पीर पराई र।'[१]

अवश्य बापू!

अब वे हाम्पीटल रोड से गुजर रह थे। उन्होने देखा खुले आकाश के नीचे पचासियो अनाथ रागी और अस्पताल म भर्ती अभर्ती रोगियो क गीन कुटुम्बी पडे हुए थे। कई टीनों क नीचे जमीन पर ऊघ रह थे और कुछ आह भर रहे थे। दा पुरुष बठे बात कर रह थ। एक लेटा था दूसरा उसक साथ आया हुआ प्रतीत हाता था। वह रहा था कल चलें गाव—दस दिन हो गए बाहर पडे बिना पैसे के कोद आख उठा कर भी नही देखता यहा।

दूसरा बाला इसमे ता अच्छा है प्राण घर पर ही निकल। नही ता नाश क लिए फिर गिडगिडाते फिरोगे। हाय राम! गरीब का कोइ नही।

'कल तुमने सुना नहा रात को एक साहब की लुगाई आई माटर नकर उसके कुत्ते का ठण्ड लग गई थी। चार पाच डाक्टर कटठे हा गए। दवाई दी सुइया लगाइ—साहब लागो के कुत्ता की भी कदर है और गरीब क लाग्ला का दुत्कार कर निकाल देते हैं नाम ह गाधी अस्पताल।

"हाय राम! मैं तो कहता था ईश्वर की इच्छा हो ता मुझे बचावे अथवा मार डाले पर मैं कोढी की सेवा किए बिना नहा रह सकता।' एक दीर्घ निश्वास छाडते हुए बापू ने कहा।

'ठीक है बापू पर किसने सुनी आपकी? दुनिया को ता अपो फरेबा स ही फुरसत नही।

अब कस्बे के बाहर गाधी पार्क के लिए घिरी हुई एक जगह आ गई। मुख्य फाटक से पूर्व की ओर खाली मे कुछ ऊचा एक काले सग मरमर का स्तूप जिस पर श्वेत मक आदमियाना कद की गाधी प्रतिमा

---

१ बापू का प्रिय भजन।

छविमान। इसका अनावरण दो वष पूव गांधी जयन्ती पर किसी बड़े मन्त्री द्वारा हुआ था। उपवन लगाने की बहुत बड़ा योजना थी। बाद म नगर पालिका का बहुत बड़ा हॉल होगा। योजना नगर दो साल स खटाई म पडी हुई भीग रही है। बजट 'एलाउ' नहीं करता और धन्ध बहुत है।

चलो बापू जनरव रहित नितान्त एकान्त म। थक गए भटकते भटकते। आराम करें फिर सुनाऊ आपका प्रिय भजन। कुछ दूर भीतर चले तो थोडे मन्द प्रकाश का आभास हुआ ज्यो-ज्यो बढ़ते गए रह रह कर कुछ मानवी रवउभरता गया। स्तूप के पीछे मसली साइज का एक लालटेन जल रहा था। दस बारह आदमी होंगे। मध्यम दर्जे स नीच के ही थे। आधे स अधिक तागा छाप थे। जुआ हो रहा था। कौडिया पड रही था।

उन्होने सुना कल यासीन का दाव पडा उसने सबको पिलाई थी। कल्लू ! आज तुम बाजी मार रहे हो तुम्ह पिलानी होगी। अब साले क्या सिर चाट रहा है फिजल एक देसी की तू अकेला पी लेना बस जान छोड मेरी। घी शक्कर तुम्हारे मुंह म कल्लू राजा। रमजान की दुआ स तुम्हारे पौ बारह। साले पीने हो पान की कर रहा है जा पान ला दस बारह सुरती के—गांधी पत्तीवाल को जगा देना। अभी ला और वह हवाई जहाज हो गया तुरत।

सहसा पुलिस के चार सिपाही आ पहुचे। क्या कर रहे हो यहा ?

ऐं साहब ?'

ऐं के बच्च कर क्या रहे हो ? चलो थान।'

एक आदमी चुपके से उठा और चार कदम चला। एक कान्स्टेबल को बिलकुल नई गांधी छाप दोहरी पत्ती पकड़ा दी। चलते बने वे। जुआ फिर वस ही। एक बोला कुत्त हैं साले पकडते हैं तो चलो मैं बताता हू कई खद्दरधारी और अधिकारी इनके पुल के टयूब लाइटो के नीचे पीते और खेलते हैं वहा जाते दम निकलता है सालो का। सब हस पडे।

बापू दखी आपके नोटो की माया। कौडी के खेल म गांधी का

माल ?"

"तो मन नाम के ये सिक्के जुआ, घूसखोरी शराब और भ्रष्टाचार म काम आएग ?

'भ्रष्टाचार ? आपके दस रुपए के सिक्के के लिए तो सकडो आदमी क्यू म खडे होते हैं और फिर होता है उनका "नक्र।'

'हे राम !'

"नोटो से गांधी का क्या सम्बन्ध ? गांधी शासक तो नही था।

'न हो भले ही, पर अर्थ के साथ बधने पर सन्त का हाल भी बुहाल होता है।"

'सेवक का शासक ! है इतिहास की एसी साक्षी और कही भी ? अनासक्ति म आसक्ति का यह नाटक, राम, राम। चलो जी घबराता है यहा से।

की तरह आकाश मे विलीन हो रहा था।

बापू बोल, 'दर्वापि, पहले परिक्रमा करें इसकी।

एवम अस्तु' और वे चल पडे।

यह पोखर है। हरा गदला पानी। कुछ बदबू भी आती है उसम। थक माद कुछ पशु पानी पी रहे हैं। पेट चिपे हुए—चमडे से ढकी हुई पसलिया साफ दिखाई पड रही हैं। प्रतीत होता है घास फूस इनको यदा कदा ही नसीब होता है।

पास वही तीन चार औरतें घडे भर रही है—मले फटे पुरान कपड पहन।

ये दोनो उनक पास चले गए। पूछा भाई आप लोग कौन ह?

हरिजन है बाबा एक ने कहा।

एसा गन्दा पानी आप लोग पीते हैं?

क्या करें पीना ही पडता है बाबा।

कुआ नही है गाव म?

है।

तो जातने नही?'

जोतें कसे? बहुत स पशु तो पिछले साल अकाल म मर गए। इस बार फिर अकाल ही है थोडा बहुत घास फूस हुआ है किसी किसी क। बिना ऊट-बल के पानी निकले कसे?

'जब यह पानी समाप्त हो जाएगा तब?

तब बाबा बाल बच्चा को लकर कहीं नहर की तरफ जहा राम ल जायगा किसी बस्ती के बाहर दिन गुजार देंगे। बहुत-से घर चल भी गए हैं।

ह राम!

बापू य लोग गन्दे बहुत रहत हैं कभी कभी तो वस्त्र धो लन चाहिए।

इनकी बातें सुनकर एक बुढ्ढा आ गया इनके पास। बोला, राजी

पकी-पकाई मिल जाती है बाबा आप क्या जानो किसी का दुख दद ?'

कसे भया ?' देवर्षि बोले।

"बाबा इनम से कइया के पास तो एक ही घाघरी है+पहनने की | गाठें लगा लगाकर पहन रखी ह।

रो पडा गाधी का हृदय—आसू वह निकले। वह गुनगुनाए 'हाय! मरी भारत माता के पास नहाकर बदलन के लिए एक साडी तक नही। एसी एक नही लाखो बहनें होगी इस देश म जिनके पास एक के सिवा दूसरा कपडा नही। उन्हे अपन जीवनवत्त का वह क्षण याद आ गया जब उन्होने कहा था और मैं तीन-तीन कपडे पहनता हू! छि! छि! जब तक मरी भारत माता की देह पूरी तरह स कपडों से नहा ढकती तब तक मुझे तीन-तीन कपडे पहनने का क्या अधिकार है? तन ढकने क लिए एक लगोटी ही मरे लिए काफी बस है और वह जीवन के अन्तिम क्षण तक लगी रही।'[1] और आज बाईस साल बाद भी वही भयावह दृश्य। ह राम!

---

१ बापू क पावन प्रसग (हिन्दी गद्य पद्य विस्तार स साभार)

७

मच्छ और बलिते घर। तंग और सरनाय हीन गलियाँ। जिधर देखो गन्दगी। धापित समान-सा दबी थाहें। कुछ शरणार्थियों से छिन पुए से झापड़े। तीमा के हर पीन पने पीलिए के रोगी की तरह। कमजोर पशु। भन अधनंगे कुछ बच्चा। उन्माद और ऊबे हुए स लोग। ग्राम्य जीवन का कोई आकर्षण नहीं था वहाँ।

बापू गाँव म आए हैं नगर के कृत्रिम भोजन वनस्पति घी मिलावट के खाद्य खा-खाकर कुछ अस्वस्थ हो गया हूँ थोड़ी मीठी छाछ किसी सद्गृहस्थ के मिल जाए तो पी आऊँ। तब शायद दुर्लभ देवर्षि न सहज भाव स कहा।

आज मेरा भी सिर कुछ भारी है। पैरों म थोड़ी जलन है। थोड़ी-सी मक्खन की कटोरी मिल जाए तो मसल लूँ सिर पर।

हाँ हाँ अवश्य लेता आऊँगा चले गए वे। सामने एक घर से एक पादरी निकलता हुआ दिखाई पड़ा। वे उसी घर के आगे जा रुके। आवाज दी माई, घर मे है कोई।

एक अधेड़-सा अधनंगा बुड्ढा बाहर आया। पसलियाँ उसकी अलग अलग गिन लो चाहे। आओ बाबा क्या चाहिए? धीरे से उसने कहा।

थोड़ा विश्राम करता ' बापू बोले।

' करो बाबा घर हरिजनों का है।'

कोई बात नहीं।'

घर मे चले गए वे। एक अधा कोना था। फूटी छत मे से वही-

हो धूप झांक रही थी। भीतर दो खटिया पड़ी थी। टूटी हुई मूंज
जगह-जगह जमीन को छू रही थी। गुदड़िया से ढके दो बच्चे थे उन-
र। पास में एक उदास, अस्त-व्यस्त बालों वाली बुढ़िया बैठी थी।

क्या है माई इनको ?'

'बुखार आता है बाबा।'

'कितने दिनों से ?"

बीस-पच्चीस दिन से।

पोखर के गन्दे पानी से आता होगा।'

क्या पता बाबा ? किस्मत की बात है।"

दवा दारू की व्यवस्था नहीं है गाँव में ?"

नहीं बाबा।'

अभी कौन आया था तुम्हारे यहाँ ?

गिरजे का फकीर था, देवता है बाबा आता है कई बार बच्चों का गालियाँ, मिठाई बांट जाता है। अभी बुखार की गोलियां, दलिया, दूध का पोडर, कुछ कपड़े साबुन दे गया है।'

'और क्या कहता है ?'

ठीक होने पर बच्चे लोग को हमारे साथ भेज दो हम पढ़ाएगा। हमरा स्कूल है। रोटी कपड़ा सब देगा।

'गाँव का कोई बच्चा कभी ले भी गया होगा ?'

हाँ बाबा पाँच-सात बच्चे ले गया वह।'

हे राम! गरीबी और भुखमरी का बेजा फायदा। कितने चालाक है ये लोग मर्म पर चोट करने का अवसर तकते रहते हैं। बहरी सत्ता, अंधी पूंजी और पागल धर्मलिप्सा हा माई तुमने क्या कहा उसे ?"

'ले जाओ बाबा हम तो अपढ़ आदमी हैं, समझते नहीं कुछ इतने में एक बालक ने उठना चाहा। डाक्टरी उठी सहारा दिया उसे। ढके बकाम-सा बैठ गया बालक।

बाबा पन्द्रह दिन तक कुनैन खाया इसने। दिखना बन्द होने लग गया। अब भी असर गया नहीं है" बुढ़िया ने कहा।

'कुनैन की गर्मी से ऐसा ही होता है माई, दूध चाहिए उस पर।

कहाँ से आया कुनन, माई ?'

'ए बाबू आता है होना तरर महू बार करता है सरकार ने भेजा है हमको।'

स्वास्थ्य विभाग (Health Department) की आर स हाना जहर बांटने है जीवन नहीं और विभाग स्वास्थ्य का है राम !

बालक ने कुछ खाने को मागा। डाकरी उठी घूघट में पीछे से लाल ज्वार का एक टुकडा उठाकर बच्चे के हाथ पर रख दिया।

'यह क्या दे रही हो माई ?' बाबू ने बेहना मिश्रित वाणी में कहा।

'रोटी का टुकडा लाल ज्वार का है बाबा।'

हे राम ! यह अमरीकी ज्वार और ये असमय में पराए आन्न हे राम ! यह अमरीकी ज्वार और य अमरीकी ने अब भी पीछा नहीं छोडा इस निर्माई गहू। आज बाईस साल हो गए अब भी पीछा नहीं छोडा इस देश का। (स्वगत) पुनर्जन्म हो मेरा और अबकी साधना में ऐसे सब घरों को जीवन बांटा में अंत हो मेरा—मन ही मुझे भंगी के घर ही जन्म लेना पड़े।' मैं गरीब से गरीब हिंदुस्तानी के जीवन के साथ मिला देना चाहता हूं। [१] कहते हुए बाबू बाहर आ गए।

सामने नीम का एक विशाल वृक्ष था। पाच-सात आदमी बैठे हुए थे वहां। एक पटवारी था उनमें। एक छोकरा मास्टर था—शहर से आया था स्कूल सम्भालने। ट्रांजिस्टर बज रहा था। बाबू भी चले गए वहां। राम राम करके बैठ गए। कुछ ठहरकर बात करने लगे। 'क्या माई गाव में लोग चरखा कातते होंगे ?'

एक ने कहा 'चरखा कौन कातता है बाबा, और किसको अब शौक है उसका ?'

दूसरा—'खादी और चरखा गए गाधी के साथ।'

तीसरा—'भुखमरी और गरीबी एक पल ही चैन नहीं लेने देते कौन काते चरखा कोई ?'

भुखमरी और गरीबी मिटाने के लिए ही तो गांधी इनके लिए

---

१ हिन्दी नव जीवन ७ ६ २४ के आधार पर

२ हिन्दी नव जीवन २७ ७ २४।

कहता था।' बापू बोले।

क्या कहता था गाधी बाबा बताओ तो भला ?" एक ने कहा—

गाधी बाबा कहता था भाई 'मुझे तो सब बातो म चरखा दिखाई देता है क्योकि मैं चारो ओर निधनता और दरिद्रता ही देखता हू। हिंदुस्तान के नरककालो को जब तक अन्न वस्त्र न मिले तब तक उनके लिए धम नाम की कोई चीज ही दुनिया म नही। वे आज पशु की तरह जीवन बिता रहे है और उसम हमारा हाथ है। इसलिए चरखा हमारे प्रायश्चित्त का साधन है।'[1]

और भाई वह बेचारा कहता था कि 'चरखा तो लगडे की लाठी है—सहारा है। भूखे को दाना देने का साधन है। निधन स्त्रियो के सतीत्व की रक्षा करने वाला किला है।'[2] और खादी को छोडने के मानी होगे भारतीय जनता को बच देना—भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना।'[3]

बाबा ठीक कहत हैं पर देश भर म तो कल कारखानो का जाल बिछ रहा है—श्रम और समय की बचत चाहता है युग और खादी का हाल यह है कि किसी बिचारे ने मर खप कर कुछ दोवटी (मोटी खादी) बना भी ली तो कोई खरीददार नहीं उसका। शहरो के खादी भण्डारो म जहा २० २५ प्रतिशत छूट घोषित करके खादी बची जाती है वहा विक्रता ग्राहको की बाट देखत देखत मूर्यास्त कर दत हैं। अकेले बिहार राज्य मे कहते हैं करोड डेढ करोड की खादी स्टॉक म पडी सडती है।'

ठीक कहते हो भाई पर इसमें चरखे का दोष तो नही है—दोष है किसी व्यवस्था का या मुट्ठी भर लोगों का अन्धा लिप्सा का। गाधी

१ हि न जा० १० ८ २४ प ४१८
२ हि० न जी २८ ६ ४४ प ५२
३ य० इ हि० न जी १९ ६ ३८
४ पत्रों के सम्बध मे लिए गए बापू के एक उत्तर से

का कथन तो था कि परिश्रम का बचाव करने वाले यन्त्रो के सम्बन्ध म लोगा का जो दीवानापन है उसी से मेरा विरोध है। परिश्रम की बचत इस हद तक की जाती है कि हजारो को आखिर भूखा मरना पडता है और उन्हें बदन ढकने तक को कुछ नही मिलता। मुझे भी समय और परिश्रम का बचाव अवश्य करना है लेकिन वह मुट्ठी भर आदमियो के लिए नही बल्कि समस्त मानव जाति के लिए। समय और परिश्रम का बचाव करके मुट्ठी भर आदमी धनाढ्य हो बठें यह मेरे लिए असह्य है। क्योकि इन यन्त्रो के चलाने के मूल म लाभ है धन तृष्णा है—जनकल्याण की भावना नही।" जबकि खादी के अर्थशास्त्र की रचना स्वदेश प्रेम भावना और मानवता के तत्व पर हुई है।[1]

इतने म सामने देवर्षि आते दिखाई दिए। 'अच्छा भाई, भगवान सभी को सद्बुद्धि दे,' कहते हुए बापू उठ खडे हुए और चल दिए।

देवर्षि की मुखश्री कुछ अधिक उदास थी। नयनो के पृष्ठो पर निराशा की रेखाए सहज ही पढी जा सकती थी।

'भगवन, पा आप तक जी भर लाए नवनीत की कटोरी मेरे लिए भी ?" बापू न सातुर स्वर म धीरे स कहा।

देवर्षि न एक गहरी लम्बी सास लेते हुए कहा 'बापू ! बहुत बुरा हाल है यहा का। आप नवनीत की कहते हैं समूचे गाव म भटक लिया छाछ नही मिली, छाछ बासी, खट्टा किसी तरह की।'

'हे राम ! क्या कहते हैं भगवन ! मेरे सपनो का भारत तो गावो म बसता है—उसका यह हाल !

गायों की दुरवस्था तो आपने देखी ही होगी बापू ?

गो सेवा के बारे म अपने दिल की बात कहू तो आप रोने लग जाएगे और मैं रोने लग जाऊ—इतना दद मेरे दिल म भरा हुआ है?[2]

'बीस-तीस घरा मे दो चार केवल ऐसे थे जि होने कहा, 'थोडा-बहुत

---

१ हरिजन सवक २० ७ ३८ पृष्ठ १८६

२ गांधी सघ सम्मेलन सावली ६ ३६

वेजीटेबल लो तो हम दे दें बाबा।"

'ऋषिवर, यह घी नहीं है, न हो सकता है। किसी प्राणी के दूध में से जो चिकना पदार्थ होता है वह घी या मक्खन है। उसी के नाम से जो वनस्पति तेल घी या मक्खन के साथ किया जाने वाला एक बड़ा धोखा है—दगा है।' तो क्या दूध बिल्कुल ही नहीं होता गांव में?"

'होता है बापू कोई तीस-पैंतीस सेर मुश्किल से और वह सारा का सारा एक जीप आती है शहर से सुबह सुबह ही ले जाती है।

कहां?"

"दिल्ली दिल्ली दुग्ध योजना (Delhi Milk Scheme) के अन्तर्गत।"

कितनी दूर है दिल्ली यहां से।'

होगी कोई ढाई सौ मील से कुछ ज्यादा।'

हे राम! गांवों का जीवन दिल्ली बम्बई और न मालूम कहां कहां, और वहां की कुनैन, गर्भ निरोधक दवाइयां यह विष गांवों को। गांव वाले भला ऐसा क्यों करते हैं?"

'रुपए सवा रुपए किलो में लोग दे देते हैं—न जमाना न बिलोना, नक्द पैसे, सौ झंझटबाजी से दूर।

तो गांव में निर्मल मानस में भी धन की धनी तृष्णा पैदा कर दी है शहरों ने—सरकार ने? और इस तरह मिथ्या मिठास पर उनका जीवन छीना जा रहा है उनसे—जानते हुए भी नहीं जानते वे इसे।"

बापू, सत्य तो यह है कि दूध बेचकर बदले में खरीदते हैं वे तमाखू का निकोटीन लिपटन और ब्रुक बॉण्ड का हल्का जहर। ऐसा चस्का लगा है लोगों को कि लाखों घर ऐसे हैं देश में जिनको गाय भैंस होते हुए भी होली दिवाली शुद्ध घी के दर्शन नहीं होते। गाय हीन निर्धना की तो बात ही क्या?"

हे राम! यह मेरा देश जहां गरीब को छाछ का पानी नसीब—नहीं। ऊंट और भेड़ नस्ल सुधार के महकमे और आदमियों की नस्ल

१ नई दिल्ली ६ १० ४६ हरिजन सेवक १३ १० ४६

८

बड़ा गाव। उदास और हसते मकान। गाव के बीचाबीच एक पचायत भवन—लगता ही उसस एक मिडिल स्कूल लडको का। सामने उनके—लकडी की एक उठाऊ दुकान जिसमें बीडिया के बण्डल कई तरह के सिगरेटो की पेटिया विभिन्न ब्राण्डो की एक धागे म झूलते चाय के पैकेट बासी और खेह भरी कचौरियालोहे की एक मैली सी परात म—पाच सात अध धाए से कप-प्लेट और मुफतखोरो-सी मण्डराती हुई मक्खिया। आगे दो मैली-सी बेंचें—पाच-सात ग्राहक उन पर। एक रावियां पतीली मे पानी उबल रहा था चाय का।

अपराह्न का समय। सूय बादलो की मटमैली झीनी परतो से ढका हुआ इस तरह निष्प्रभ था जिस तरह विकारो स ढकी आत्मा का स्वरूप।

एक बडी सी गाडी आई और पचायत भवन के भीतर। एक महिला, आयु म युवा, अवस्था म चूसे आम की तरह साथ मे एक चश्माधारी प्रौढ—पण्ट और गम कोट स ढका हुआ। उनके पीछे पाछे पाच-सात ग्रामीणो का लिए एक जवान सा व्यक्ति भीतर चला गया मानो गाडी की प्रतीक्षा म ही था। स्त्रिया भी इक्का दुक्का आ-जा रही थीं।

उधर उदास धूप म कुछ दूर दस-बारह आदमियो का एक समूह बठा था। य दोना भी चले गए उधर—बैठ गए एक किनारे। बापू ने धीमे से पूछा एक आदमी से, 'क्या भाई उधर वे लोग आ रहे हैं—कोई सत्सग हो रहा है क्या ?'

नहीं बाबा परिवार नियोजन का सरकारी अभियान है। लूप नसबन्दी और गर्भ निरोधक दवाइयों की व्यवस्था है वहां। दो दिन का कैम्प (Camp)—लगा है उसने बताया। इसके तुरन्त बाद ही एक लोफर टाइप युवक ने कहा सत्संग है सत्संग बाबा—समय की मांग का सबसे बड़ा सत्संग। आप लोग भी चाहें तो सहयोग कर सकते हैं इसमें। सेवा और मेवा दोनों मिलते हैं वहां। बोलो है हिम्मत ?

भाई हम समझे नहीं तुम्हारा आशय देवर्षि ने उत्सुकता से कहा।

'गांजा-वाजा—भंग-तमाखू कुछ पीते हो या नहीं ? युवक ने पूछा।

सत्संग से इनका मतलब ?

मतलब पीते हो तो महीने भर रोज रुपये का गांजा पीना, भंग छानना। रुपये बत्तीस आप दोनों को मिल जाएंगे नसबन्दी करवाने पर चाहे अभी चलो मेरे साथ।'

मगर इससे तुम्हें क्या लाभ होगा ?

आठ आठ रुपये मुझे भी दलाली के। दो दिन मैं भी एक एक बोतल हरा ठर्रा पीकर खर मनाऊंगा आपकी।

और भी कोई लाभ लूटने वाला है इसमें ?

दस पांच रुपये डाक्टर को भी मिल जाएंगे—एक रात भी वह भी अच्छी गुजार लेगा आप लोगों की महर पर। इतना तो प्रत्यक्ष पुण्य है बाबा गंगा बह रही है गंगा मौका है अभी हाथ धोना चाहो तो धो लो।

सब हम पढ़े एक बार, भवन बापू बैठ य मौन, उन्माद ग्लानि मे अपने में।

पर भाई दो मिनट की अंधी लालसा पर हमारा और अपना यह मार्ग और परलोक दोनों बिगाड़ रहे हो—केवल जड़ रुपये के पीछे। मनुष्य की देह भाग के लिए हर्गिज नहीं मात्र सेवा के लिए है। त्याग में रहस्य है जीवन है भोग में मृत्यु है।[1]'

[1] सेवाग्राम ११ २ ३६ ह० क० ए मत्र २४ २ ६६

"रुपये के पीछे तो सारा देश—सरकार बावली हो रही है बाबा रुपया दे दो, फिर चाहे गाय कटवा लो - स्वीकृति ले लो कसाईखाना की, चाहे जिसका मान अपमान हुआ, दलबदल कुछ ही करवा लो—सिद्धांत धरे रहेंगे ताक मे। विदेशी रुपय पर—विशाल सरकार की दुरवस्था नही देख रहे आप लोग ?'

बापू के मौन अधर खुले अब हे राम रुपय ने सबको रक कर दिया।"[1]

इतने म फाटक के पास दो-तीन ग्रामीण खडे दिखाई पडे उसे उम्मीदवार से। वह चलता बना।

एक समझदार वद्ध ने कहा फितूर है बाबा, ध्यान मत देना। यही कमाई है इसके। दो-तीन अविवाहित गरीब छोकरो के नसबन्दी करवा दी इसने बहका कर बेचारो की। अभी दो महीने बाद एक का तो विवाह होने वाला था।

एक युवक— न मालूम कितने केस हो गए हैं—और होते है एसे आए दिन। इतना बडा देश है—कौन किसकी सुनता है ? सरकार को अपनी किलेबन्दी से भी फुरसत नही।'

दूसरा युवक बीच मे ही बोल पडा— शतरज के मुहरो से लडते रहते हैं मन्त्री और विधायक तो।'

हे राम कहा रुकेगा देश जाकर। भोग के लिए खुला प्रचार।'

एक वद्ध— इस युग म विकारो की महिमा इतनी बढ गई है कि अधम को धम मानने लग गए हैं'[2] बेचारा गाधी ठीक कहता था।

गाधी न भी कहे तो भी सत्य बात तो माननी ही चाहिए। सयमहीन स्त्री या पुरुष गया बीता समझिए। इन्द्रियो को निरकुश छोड देने वाले का जीवन कणधारहीन नाव के समान है जो निश्चय पहली चट्टान से ही टकराकर चर चर हो जायगी।[3]

---

१ हि स्वराज—१६ ८— पसा आदमी को रक बना देता है।
२ हिदी नव जीवन ८ १ २५
३ हरिजन सेवक २ १ ३६ प २६ २६१

एक युवक—'टिड्डियों-सी बढ़ती हुई जनसंख्या देश के लिए, आखिर है तो भयावह—यह बात तो आप मानते हैं बाबा ?"

बापू— इस विषय में जितना और जैसा प्रचार किया जाता है वैसी बात नहीं है। अतिशयोक्ति सारी सत्य नहीं होती।'

दूसरा आदमी बीच में ही 'ठीक कहते हो बाबा लाखों मन अनाज तो सरकारी अनाचार के वश सड़ाकर समुद्र में फेंक दिया जाता है—करोड़ों रुपए का कपड़ा आग की भेंट बना देते हैं लोग—कितना ही धान तस्करी से लोग सीमा पार कर देते हैं और न मालूम क्या-क्या होता है विकास के नाम पर। नसबन्दी के नाम पर ऐंद्रिय भूख भड़काती है सरकार और नपुंसक करती है राष्ट्र को।"

युवक— पर ऐंद्रिय भूख भी तो एक स्वाभाविक भूख है उसका दमन हानिप्रद है—मानसिक उन्माद और भगों जैसी भयंकर बीमारियां इसकी रोक से हो जाती हैं।

बापू—'ऐसी बेतुकी बात तो फ्रायड के चेले ही कह सकते हैं भाई संयम से बीमारियां होती नहीं मिटती हैं। अनगिनत लोग स्वाद की खातिर खाते हैं—इससे स्वाद इन्द्रियां का धर्म नहीं बन जाता।[1] ज्ञान और इच्छा पूर्वक हुए इंद्रिय दमन से आत्मा का लाभ होता है हानि नहीं।' बिंदु धारण जीवन और निपात मृत्यु है यह शास्त्रोक्ति शत प्रतिशत सही है।'[2]

एक वृद्ध— अच्छा बाबा सब कुछ जाने दो—आप लोग महात्मा हो—यह तो बताओ कि इस नसबन्दी धर्म के बारे में आखिर गांधी बाबा ने भी तो कुछ कहा ही होगा ?'

'हां भाई, कहा बहुत कुछ था उस फकीर ने पर लिप्सा में डूबी बहरी जनता और अंधी सत्ता ने कब सुना उसे ? उसका कहना था भाई सन्तति के जन्म को मर्यादित करने की आवश्यकता के बारे में दो राय हो ही नहीं सकते परन्तु इसका एकमात्र उपाय है आत्मसंयम या

---

१ यंग इंडिया ३ ६ ४६ हरिजन सेवक ७ ७ ४६

२ हिन्दी नव जीवन ८ १० २२

ब्रह्मचय, जोकि युगो से हमे प्राप्त है। यह रामबाण और सर्वोपरि उपाय है, और जो इसका सेवन करते है उन्हें लाभ ही लाभ होता है। कृत्रिम साधनो की सलाह देना मानो बुराई का हौसला बढाना है। उससे पुरुष और स्त्री दोनो ही उच्छृंखल हो जाते हैं। कृत्रिम साधनो के अवलम्बन का कुफल होगा नपुसकता और क्षीण वीर्यता। यह दवा रोग से भी ज्यादा बदतर साबित हुए बिना न रहेगी।'[1]

— मुझे इसमे जरा भी शक नही कि जो विद्वान् पुरुष और स्त्रियां मिशनरी उत्साह के साथ कृत्रिम साधनो के पक्ष मे आन्दोलन कर रहे है, वे देश के युवको की अपार हानि कर रहे है। उनका यह विश्वास झूठा है कि ऐसा करके वे उन गरीब स्त्रियो को सकट से बचा लेंगे जिन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध मजबूरन बच्चे पैदा करने पडते हैं। परन्तु सबसे बडी हानि जो आन्दोलन कर रहा है वह यह है कि पुराना आदर्श छोडकर वह उसके स्थान पर एक ऐसा आदर्श स्थापित कर रहा है जिस पर अमल हुआ तो मानव जाति का नैतिक और शारीरिक विनाश निश्चित है।[2] बाध्यीकरण का कानून लादने को मैं अमानुषिक मानता हू।'[3]

सभी लोग— बिल्कुल स्पष्ट कहा था गाधी बाबा ने—उसके बिगडे चेला ने कानो मे तेल डाल रखा है इसका कोई क्या करे।

एक सज्जन 'लेकिन इसके पक्षपाती अर्थवक्ता कहते है बाबा, यदि यह जनसख्या ऐसे ही बढती रही तो लोग भूखों मर जाएगे। गाधी का उल्लेख क्या था इस सम्बन्ध मे ?' इतनी देर मौन रहने के बाद अब देवर्षि बोल पडे—

सदन के सदस्य की तरह भाई वे कहते थे, यदि यह कहा जाए कि जनसख्या की अतिवृद्धि के कारण कृत्रिम साधनो द्वारा सन्तति नियम की राष्ट्र के लिए आवश्यकता है तो मुझे इस बात मे पूरा शक

---

१ हिन्दी नवजीवन १२ २५

२ २ , ३६

३ अमृत बाजार पत्रिका १२ १ ३५

हा, आओ बाबा ' आदमी ने कहा।

भाई, यहा यह क्या गोलमाल चल रहा है ?

साम्प्रदायिक दगे हो रहे हैं बाबा सकडो जानें काल के मुह म फिजूल चली गइ। गुण्डे लडवात है लेकिन गरीब जनता न क्या बिगाडा है किसी का ? सुबह मजदूरी पर निकलती है शाम को दो रुपये पसीना बहाकर लाती है। रात को रूखा-सूखा जमा मिला थकी मादी अपनी कोठरी म दुबक जाती है। उस क्या मतलब मजहब स— क्या समझ वह धम की बारीकी को बेहाल है कोई नही सुनता।'

'यह तो गाधी की भमि है।'

"उसको भी (साबरमती) अछता नहा छोडा पागल लोगा न।

'पहल किसने की कुछ मालूम है ?

मुसलमानो ने और ये गाधी के हो सिर चढाए लोग हैं हिदुआ को तो हिजडा बना दिया उसने। आए दिन पिटत रहते हैं बेचारे।

मगर उसने तो कहा था जब तक हि दू डरा करेंगे तब तक झगड होते ही रहेगे। जहा डरपोक हाता है वहा डरानेवाला हमशा मिल ही जाता है। हिदुओं को समझ लेना चाहिए कि जब तक वे डरते रहेगे तब तक उनकी रक्षा कोई न करेगा। [1]

इतने म ही पास के कमरे से निकलकर एक अधेड-सा व्यक्ति और आ गया। बोला 'भाई मैं पद्द वर गाधी के साथ रहा हूँ वह बचारा साफ कहता था मेरा निजी अनुभव इस ख्याल को मजबूत करता है कि मुसलमान प्राय गुण्ड हात ह और हिदू अमूमन नामर्द [2]—हिंदू धम का दूसरा नाम कमजोरी और इस्लाम का शारीरिक बल हो गया है।' पर दगा का मूल कारण है मुसलमाना म गलत प्रचार और वह होता है विदेशी तत्वो या पाकिस्तानी एजेन्टों द्वारा।

बापू बोले भाई एक बात और भी है वह है शासन या नेताओं

---

१ गांधी वाणी पृ २ ३

२ हिन्दी नव जीवन १ ६ २४

३ हरिजन सवक ६ १ ४०

का अविवेक। मुझे इस बात का पूरा निश्चय है कि यदि नेता न लडना चाहे तो आम जनता को लडना पसन्द नही है। इसलिए यदि नेता लोग इस बात पर राजी हो जाए कि दूसरे सभ्य देशो की तरह हमारे देश मे भी आपसी लडाई झगडो का सावजनिक जीवन से उच्छेद कर दिया जाना चाहिए और वे जगलीपन और अधार्मिकता के चिह्न माने जाने चाहिए तो मुझे इसमे कोई सन्देह नही कि आम जनता शीघ्र ही उनका अनुकरण करेगी।'[1]

उपस्थित दोनो ही व्यक्तियो ने कहा, 'साधुवाद बाबा, ठीक है आपका कथन।'

देवर्षि बोले 'अच्छा भाई रोटिया ठण्डी हो रही हैं हम तो फक्कड लोग है आ गए घूमते हुए इधर।'

बुढिया बाली "आप भी बाबा भोजन करें।

नही माई हम रात को भोजन नही करते,' कहकर दोनो चल दिए।

कुछ ही दूर चले थे कि उन्हे अल्लाहो अक्बर और फिर हर-हर महादेव का मिश्रित पर अनस्पष्ट कोलाहल सुनाई पडा और तभी ठ ठ की दो आवाज शहरी खामोशी का पट चीरती हुई वायु म विलीन हो गई। देवर्षि बोले—

बापू विष अभी बुझा नही है।
मालूम पडता है लोगो न आखें खा दी है हे राम!

'बापू विचारो की यह बदहजमी न जाने क्या ले जाएगी लोगो का?'

सहसा सामने उन्हें धुधला धुधला प्रकाश दिखाई पडा। व चले वहा। तग-सा कोठरी थी। एक ही द्वार था। उसकी देहली पर एक डोकरी सडक की ओर मुह किए बठी थी।

देवर्षि बोले "इतनी रात गए इस तरह बठी किसी की बाट देख रही हो क्या?'

---

१ यग इडिया २४ १२ ३१

हां, भाग्य बाबा ' आदमी न रहा।

भाई यह यह क्या गोलमाल चल रहा है ?

साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं बाबा, सैकड़ा जानें काल के मुंह म फिजूल चली गई। गुण्डे सलवान है लेकिन गरीब जनता ने क्या बिगाड़ा है किसी का ? सुबह मजदूरी पर निकलती है शाम का दो रुपये पसीना बहाकर लाता है। रात का रूखा-सूखा जसा मिला पकी मांदी अपनी कोठरी म दुबक जाती है। उस क्या मतलब मजहब स— क्या समझ यह धम की बारीकी को वहां र[1] कोई नहीं सुनता।

"यह तो गांधी की भूमि है।'

'उसको भी (साबरमती) अछूता नहीं छोड़ा पागल लोगों ने।'

' पहल किसने की कुछ मालूम है ?

मुसलमानों ने और ये गांधी के ही सिर चढ़ाए लोग हैं हिन्दुओं को तो हिजड़ा बना दिया उसने। आए दिन पिटते रहते हैं बेचारे।

मगर उसने तो कहा था जब तक हिन्दू डरा करेंगे तब तक झगड़े होते ही रहेंगे। जहां डरपोक होता है वहां डरानेवाला हमेशा मिल ही जाता है। हिन्दुओं को समय लेना चाहिए कि जब तक वे डरते रहेंगे तब तक उनकी रक्षा कोई न करेगा।"[2]

इतने म ही पास के कमरे म निकलकर एक अधेड़-सा व्यक्ति और आ गया। बोला "भाई मैं कई बरस गांधी के साथ रहा हूँ वह बराबर साफ कहता था मेरा निजी अनुभव इस ख्याल को मजबूत करता है कि मुसलमान प्राय गुण्डे होते है और हिन्दू अमूमन नामर्द[3]—हिन्दू धम का दूसरा नाम कमजोरी और बदनाम का शारीरिक बल हो गया है।' पर दंगों का मूल कारण है मुसलमानों म गलत प्रचार और वह होता है विदेशी तत्वों या पाकिस्तानी एजण्टों द्वारा।

बापू बोले, भाई एक बात और भी है वह है शासन या नेताओं

---

१ गांधी वाणी पृ २०१

२ हिन्दी नव जीवन १ ६ २४

३ हरिजन सेवक ६ १० ४०

का अविवेक। मुझे इस बात का पूरा निश्चय है कि यदि नेता न लडना चाहें तो आम जनता को लडना पसन्द नहीं है। इसलिए यदि नेता लोग इस बात पर राजी हो जाएं कि दूसरे सभ्य देशों की तरह हमारे देश में भी आपसी लडाई झगडों का सार्वजनिक जीवन से उच्छेद कर दिया जाना चाहिए और वे जंगलीपन और अधार्मिकता के चिह्न माने जाने चाहिए तो मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि आम जनता शीघ्र ही उनका अनुकरण करेगी।"[1]

उपस्थित दोनों ही व्यक्तियों ने कहा 'साधुवाद बाबा, ठीक है आपका कथन।'

देवर्षि बोले अच्छा, भाई रोटियां ठण्डी हो रही हैं हम तो फक्कड लोग हैं आ गए घूमते हुए इधर।"

बुढिया बोली 'आप भी बाबा भोजन करें।

नहीं माई हम रात को भोजन नहीं करते,' कहकर दोनों चल दिए।

कुछ ही दूर चले थे कि उन्हें अल्लाहो अकबर और फिर हर-हर महादेव का मिश्रित पर अनस्पष्ट कोलाहल सुनाई पडा और तभी ठां-ठां की दो आवाजें शहरी खामोशी का पट चीरती हुई वायु में विलीन हो गई। देवर्षि बोले—

बापू विष अभी बुझा नहीं है।

मालूम पडता है लोगों ने आंखें खा दी हैं, हे राम!

बापू विचारों की यह बदहजमी न जाने कहां ले जाएगी लोगों को?'

सहसा सामने उन्हें धुंधला धुंधला प्रकाश दिखाई पडा। वे चले वहां। तंग-सी कोठडी थी। एक ही द्वार था। उसकी देहली पर एक डोकरी सडक की ओर मुंह किए बैठी थी।

देवर्षि बोले 'इतनी रात गए इस तरह बैठी किसी की बाट देख रही हो क्या?"

---

१ यंग इंडिया २४ १२ ३१

'हां बाबा,'' उसने रुलाई से कहा।

'कौन है तुम्हारा ?

''कल तक तो सभी कुछ था मेरा अब कोई नहीं है।'

'क्या मतलब है तुम्हारा ?'

'तीन लड़के थे एक दामाद था चारों फरसों मार दिए गए। किसी ने मुझ भी मारना चाहा। देखो मेरी बाजुएं—एक तो बिल्कुल टूट सी गई है। अब बैठी हू इन्तजारी म किसी हत्यारे की।'

देवर्षि ने गौर स देखा उस। बाहुओं पर पट्टियां बांधे, अस्त व्यस्त श्वेत वेश उसके। उन्हें वह विभाजित भारत माता के मानचित्र-सी प्रतीत हुई।

वे बोले 'हत्यारे की इन्तजारी क्या माई ?

'इसलिए कि वह अपनी प्यास भी बुझा ल, और मेरी प्यास का भी अन्त कर दे। मगर कोई आता दिखाइ नही पड़ता।

बापू— हे राम! बेकसूर लोग नाहक मारे जाते हैं।'

देवर्षि— बापू, बाईस साल हो गए स्वतन्त्र हुए साम्प्रदायिक प्लेग मिटना तो दूर रहा, अधिक बढ़ा है।

चलें अब, नहीं देखा जाता यह सब।

१०

दोपहर क दो बजे थे। बादशाह खान एक सरकारी भवन के कमरे म विचारमग्न बठे थे। बापू और देवर्षि वहा पहुच गए और उनमे वार्तालाप होने लगा।

बापू— बादशाह बडे थके मादे दिखाइ पड रहे है ?

बादशाह— भाई थका मादा, मोटा-ताजा तो शरीर का स्वभाव है दूसरा अवस्था भी तो आ गई अब।

ठीक है बादशाह फिर भी मालूम पडता है थोडे दिना पहले तक आप तकलीफो की बौछार सहते रहे है। आपके चेहर का एक एक शिकन किन्ही ददनाक पीडाओ का ढका हुआ दास्तान नजर आता है मुझे।

आजादी का दीवानापन कुछ ऐसा ही होता है भाई।

'आजादी की लडाईतो आप लड चुके कभी के फिर कैसी लडाई नही समझा मैं।

पाकिस्तान की अठारह साल की जिन्दगी म मुझे पन्द्रह वष जेलो मे रहना पडा। कदा म जो खुदा किसी को न दिखाए—इस अवधि म हजारो की सख्या म खुदाई खिदमतगारो को मौत के घाट उतार दिया गया—कद म बन्द रखा गया और उनके साथ ऐसे व्यवहार हुए, एस जुल्म तोडे गए जिन्हे सुनकर इसान की रूह काप उठती है।'

हे राम! सत्ता की अधी लिप्सा कितनी पागल होती है मगर बादशाह इससे आपकी दिली ताकत बढी है आत्मा बफ की तरह चमकी है और खुदा के अधिक प्यारे बन है आप।

क्या कह सकता हूं ?"

बहुत वर्षों पहले आपको गांधी के साथ देखा था आपको वह तस्वीर याद आ गई।

ओह गांधी फकीर था खुदा का नूर उसकी आखों में बरसता था।

आप गांधी शताब्दी पर यहां आए हैं आपने गांव और नगरों का भ्रमण किया होगा तो आपकी आखों के आगे गांधी और उनके सपनों का भारत नाच उठे होंगे ?

'मुझे ऐसा लगता है कि मैं गांधी के उस भारत में नहीं हूं जिसकी उन्होंने कल्पना की थी और जिसके लिए वे जूझे थे। मुझे व यह कहते हुए मालूम पड़ते हैं कि खान हमने इसलिए जुल्म यातनाएं और दमन सहे थे क्या देश का यह हाल ?

'क्या ऐसी क्या बात है बादशाह जनता का राज्य है यहां।

कहने को तो यहां जनता का राज्य है लेकिन यहां के लोग सबसे अधिक बेगाने भूखे और नंगे हैं। देश की अधिकांश जनता गरीब है। यदि जनता का राज्य है तो गरीबों का राज्य होना चाहिए पर कहां है गरीबों की चिंता करनेवाले लोग, किसे फुरसत है उनके लिए सोचने की ? [1]

नेता तो जनता के ही है।

लीडरों पर तो सरमायेदारों का फन्दा है। ये सरमायेदार फिरका परस्ती को बढ़ावा देते है—दंगे करवाते हैं। दंगों में गरीब हिंदू मुसलमान मारे जाते हैं। बड़े लोग दंगों में नहीं मारे जाते। [2]

पर यहां तो धर्मनिरपेक्षता है प्यारे बादशाह।

बादशाह ने बड़ी दर्द भरी आवाज में कहा, संवैधानिक गारण्टी के बावजूद, इस देश में वास्तव में कोई धर्मनिरपेक्षता नहीं है। इस देश की धर्मनिरपेक्षता तो कागजों तक ही सीमित है। मैं तो कहता हूं

---

१ दरभंगा ७ दिसम्बर ६६
२ अहमदाबाद २१ दिसम्बर ६६

कि साम्प्रदायिकता या धार्मिक आधार पर इस उपमहाद्वीप का विभाजन होना ही नही चाहिए था।

देर्वपि बादशाह के शान्त सरल चेहरे की ओर देखते हुए उनके सत्य से बड़े प्रभावित हुए। बोले 'बादशाह, निश्चय ही आपके पैगाम से इस देश के ऊंघते लोगो की आख खुलेंगी।

'भाई मेरा कोई पैगाम नही मैं तो गाधी का पैगाम दुहराया करता हू—इसलिए कि वह मुझे अच्छा लगता है और अच्छा इसलिए कि वह सचाई से जुड़ा है। उन्होने कहा था कि मुल्क के लोगो मे सचाई और दयानतदारी होनी चाहिए। मैं मानता हू कि सबसे बड़ा मजहब मुहब्बत और सचाई है खिदमत है।'[1]

गाधीजी के सपनो की पूर्ति मे एक बात तो आपको नजर आई होगी?'

'क्या भला?

"टूटती हुई काग्रेस।

वह छोटी जरूर हो रही है मगर उसकी फूट के हाथ पाव और मोटे हो रहे है। यहा के खुदगर्ज लोग शहतूत के पत्ते पर बैठे रेशमी कीड़े की तरह तब तक उसका पीछा नही छोड़ेंगे जब तक उसका पूरा सफाया न हो जाएगा।'

देर्वपि प्रणिपात होते हुए बोले, सचमुच आप धरती के बादशाह है—बेताज और बेदाग। प्यारे बादशाह धरती से लेकर अनन्त आकाश तक एक ही तत्त्व मुहब्बत और सचाई बिखरा हुआ है मगर धरती के लोगो का दुर्भाग्य समझो कि आप जैसे शहशाहो के होते हुए वे दुखी हैं—मालिक उन्हे सद्बुद्धि दे।'

बापू— बादशाह आप शतायु हो हम आपसे मिलकर बड़े खुश हैं और धरती भाग्यवती।

देर्वपि— नक्काला की नगरी मे असली इसान, जय हो आपकी—अच्छा, अलविदा।

---

१ नई दिल्ली चित्रकला सगम से

११

कल बापू ने कहा था, 'देवर्षि आज तबियत कुछ नरम है इसलिए कल पैदल यात्रा स्थगित कर कहीं आराम करें तो अच्छा हो।'

'पैदल यात्रा न सही बापू कल यदि थोड़ी देर रेलयात्रा का लाभ ले तो कैसा रहे? पैदल तो रोज ही घूमते हैं।' देवर्षि कुछ सोचकर बोले।

'पर कल तो सोमवार है मौन है मेरा। बातचीत तो फिर नहीं कर सकूंगा किसी से।'

'न सही देखेंगे और सुनेंगे तो सही। अपना विशिष्ट उद्देश्य तो देश के लोगों की सही अवस्था देखना ही है। बोलने न बोलने से मैं सोचता हूँ उसमें कोई व्याघात नहीं पड़ेगा और वैसे आपका कथन भी यही है कि सत्य के पुजारी को मौन का अवलम्बन करना उचित है।'[1]

'बहुत अच्छा,' बापू ने अपनी सम्मति दे दी और इसीलिए आज वे दोनों एक मुसाफिरखाने में खिड़की के पास खड़े थे। दो आदमी पहले से ही थे वहाँ। दोनों ही पैंतालीस पचास के आसपास थे। ग्रामीण थे। घुटनों तक धोतियाँ, मैली अंगरखियाँ मोटे चमड़े की कोरी लगी जूतियाँ और सिर पर खाकिया रंग की मैली मोटी पगड़ियाँ यह वेशभूषा थी उनकी।

उधर फर्श पर उनके परिवार थे। एक क्षीणकाय बुढ़िया फट-

---

१ आत्म कथा पाठ ३५

पुरान कम्वल से लिपटा एक बुड्ढा, दो जवान औरतें दोवटी व मले कुचले लाल ओग्ने ओगे हाथो मे लाख की मली घिसी हुई चूड़िया और सिर पर पूर के मोट बोरले। उन लोगा के आसपास चार अधनंग मट मले बच्चे इधर उधर ताक रहे थे। उनके हाथा म चौथाई चौथाई लाल ज्वार की रोटी के टूक थे। पास ही उन सबके फटे पुराने डोरिया और मली मूज से बधे बिस्तर थे। दो-तीन बढक्कन काल पीप थ। सर्दी काफी थी। बच्चा का छोड, सभी दुवके हुए बठे थे।

टिक्टघर की खिड़की खुली उनम से एक आदमी न हाथ बढाया 'आठ टिकट वाबूजी, गोपालपुर जाएगे।"

"पद्रह पसे खुले लाओ' बाबू ने कहा।

नहीं हैं बाबूजी।"

'तो फिर टिकट भी नही है, भगो यहा से।"

उदास होकर बठ गए बेचारे। थोडी देर बाद उनमे से एक उठा। 'टिक्ट दे दो बाबूजी, पैसे खुले आएगे तब ले लेंगे," गिडगिडाकर बाला।

'चलो चलो जल्दी पहले क्या हो गया था?' टिक्टें ले ली। पन्द्रह पस रख लिए सो रख ही लिए बाबू न। दर्वाव वाल 'बापू जितना नतिक पतन आजादी के बाद इस धरती के लोगो का हुआ है, उतना दूसरी जगह कही नही। धनखोरी का लटू लागा के मुह ऐसा लगा है कि मत पूछो। बापू ने क्षण भर के लिए आखें बन्द कर ली। देवर्षि न एक से पूछा, 'क्यो भाई कहा से आ रहे हो आप लोग?"

मारवाड़ के हैं बाबा।'

जा कहा रहे हो?

"जहा कही चुग्गा पानी मिल जाएगा।'

'तुम लोगो ने जिसे वाट दिए थे उसने तुम्हारी मदद की कोई कोशिश नही की?'

मदद की कहने हो बाबा, उसको शायद हमारी सूरत से ही चिढ हो।' कम्बल म लिपटा हुआ बुड्ढा बोला 'धीरे धीरे हा बाबा मदद की थी उसने हमारी। पाच रुपय मुझे दिए थे—पाच इस बुढ़िया

को। हम वामार थे। जीप म बैठकर हमको गाव का सरपच ले गया और जीप पर वापस छोड गया। कहा, घी खा लेना इनका।"

'पाच रुपये का क्या घी आया होगा ?'

बडे आदमियो की बडी बाली होती है बाबा, घी क्या छाछ भी नसीब नहीं है हम लोगो को।

"वोट किसको दिया तुमने ?'

बल की जोडी को।

'फिर वही जीता होगा ?

'जीता ही होगा बाबा, सुना तो ऐसा ही था।'

गाव म औरो को भी बाटा होगा कुछ ?'

'कहते ह पाच-सात हजार रुपये सरपच और दो-चार लठुए पचा गए।

'पाच-सात हजार !"

"यह कोई ज्यादा है बाबा, उन दिना तो रुपया किसी का खाना खाना चाहिए पानी की तरह पसा बहता है। दूसरा बोला, 'राता रात बिजली और पानी के नल लगते हैं बाबा।

"तो तुम्हारे गाव म भी कुछ लगा होगा ?"

'बिजली लगने की बात तो थी पर लगी नहीं।

'बिजली लगन स तुम खुश थे ?'

'बिजली नही हम तो रोटी कपडा मजदूरी चाहिए बाबा, बिजली तो हम पर यो ही खूब गिर रही है तीन चार साल हो गए खेतो म कुछ होता नहीं पशु सब मर गए। अब वाली बाट काई हम छप्पा[1] बचकर आए हैं पहुचेंगे तब तक पाच-पाच, सात-सात रुपये रहेगा हमारे पास।

'अगर तुम वोट और किसी को देते तो ?'

तो मुसीबत म फस जाते बाबा। पीछे एक बार हमने डाक्टर को

---

1 छप्पन

बाट दिए थे। गाव के कई लठुआ ने हमारी झोपडिया ही जला दीं। हम रोए-कूके बहुत किसी ने सुना ही नही।

देवर्षि ने बापू की ओर दृष्टि कर कहा, बापू सुना आपन, यहा तो पचायत से लेकर केन्द्र तक वोट खरीद जाते है या फिर आतक से डलवाए जाते ह, तभी भारतीय सत्ता के उद्यान म कल्याणकारी जन तन्त्र की सुगन्ध नही।'

बापू ने एक बार आखें बन्द कर ली मानो वे अन्तःकरण से प्रार्थना कर रहे थे कि हे भगवान् लोगो को सदबुद्धि मिले। सचमुच 'एमी प्रार्थना वाणी का वभव नहीं है, उसका मूल कण्ठ नही, हृदय है।'[1]

देवर्षि बोल "भाई, डोकरी कभी की दुबकी पडी है बीमार है क्या ?" उनम से एक बोला 'एक बच्चा तो सुबह सुबह चल बसा, बुखार था और यह भी जाती लगती है बाबा, क्या करें हमारे पास तो कोई उपाय नही।

देवर्षि न देखा शरीर जल रहा था। बोले फ्लू है इसे क्या दिया था तुम लोगो न ?'

'क्या देत बाबा हमारे पास तो सेकने को लकडिया भी नही, रात गम पानी दिया था बस। बापू ने धूमिल आकाश की ओर देखा और आखें फिर बन्द कर ली। उनकी आखो मे दो बूदें व्यथा के अति-रेक म अनायास ही बुढ़िया के पैरो पर गिर पडी।

सहसा गाडी की घड घड सुनाइ पडी। व बाहर आ गए। बडी भाड थी। किसी तरह से व एक डिब्बे म फस गए। पेशाबघर और पाखाने के पास फश पर अपन झरझर कथा डाल छ-सात अधनगे स्त्री पुरुष बच्चे बन्द मुटिठया किए बठे थे। लोग इनके गरठड और बडे विस्तरा पर से आ-जा रहे थे। इससे कथाओ का जीण शरीर और क्षीण हो रहा था रूढिग्रस्त और रोगी समाज की तरह।

डिब्बे मे दो-तीन नेता टाइप, शेष अधिकतर मध्यम श्रेणी के लोग थे। ऊपर की सीटो पर कुछ लोग तानकर सो रहे थ। एक दो अखबार

---

१ आत्मकथा पृष्ठ ८७

लिए हुए थे। इस समय दिन के कोई साढे ग्यारह बज होंगे। बापू और देवर्षि एक कोने म खडे हो गए—किसी न भी इन्ह बठने को नहीं कहा यद्यपि सीटो पर जगह पर्याप्त थी।

एक न देवर्षि स कहा 'कहा जा रहे हो बाबा, कुछ भजनवाणी तो सुनाओ।

क्या सुनाएगे ये लोग दश का भट्टा बठा दिया इन लोगो न।

'इन्ह ही क्यो कहते हो, कुर्सियो को क्यो नही कोसते। बाईस साल मे साले देश को रोटी-कपडे लायक नही बना सके। सारा देश चाट गए केवल ठठरी बची है और य ही बने रहे तो वह भी चट कर जाएग।

तुम्हारे हिसाब मे नेहरू भी बुरा ही था? उनम एक खद्दर धारी-सा दिखने वाला बोला। ऊपर की सीट पर सोया हुआ एक युवा उठ बैठा बोला सच पूछो तो नेहरू न ही देश की नाव डुबोई। अपनी महत्वाकाक्षा और अपनी समझ को वह देश से कही अधिक बडी समझता था। उसकी आखों म भारत का नक्शा नही यूरोप का वभव तरता था। चीनी हमले के समय उसकी रोल्डगोल्ड तरक्की का मुल्लमा उतरकर जो प्रत्यक्ष पीतल चौडे आया, किसी से नहीं छिपा।'

यह सुनकर एक अन्य महाशय भूमिगत नागा की तरह रजाई म स उछल पडे बोल, उसने भ्रष्टाचार नहीं किया, हम मानते है लकिन भ्रष्टाचार पनपाया उसी ने। बेटी मथाई, मालवीय मनन करो कैरो किस किस के नाम गिनाऊ मैं। उन पर कुछ करन से पार्टी म ढाई पडती है—विदेशो म बदनामी होनी है—इसलिए चुप रहो ज्यादा स ज्यादा एक बार थोडा अवकाश दे दो उन्ह—बस। इसम भ्रष्टाचारियो के घर स क्या गया?'

एक अन्य वद्ध महाशय बोले एक आदमी था बचारा लालबहादुर। देश की नाडी पहचानता था चला गया।'

वही लालबहादुर न जिसके घर अभी-अभी किराए के गुण्डो न दिन-दहाडे राजधानी म हुल्लडबाजी की थी और सत्ता चुपचाप खडी देखती रही। एक अन्य व्यक्ति न बात का समथन करते हुए कहा।

अरे कौन-सी सत्ता कसी सत्ता? अभी कल ही मेरा भाई आया

है कलकत्ते से आखों देखा हाल सुना रहा था वहां का। हत्या, हिंसा, लूटपाट, चोरी डकैती, जर जमीन पर जबरदस्ती कब्जा, फसल की जबरदस्ती कटाई थानों का घेराव गावों म भगदड शहरों में आतक, निष्क्रिय पुलिस और कुर्सियों से चिपके अर्थहीन हैरानी जाहिर करके कर्त्तव्य पूरा समझ लेते हैं। सोनार बगला का यह हाल मिट्टी म मिल रहा है।'

एक अन्य क्या बुरा होता है वहा तुम्हारी ससद् म क्या होता है हाथापाई और मल्ल युद्ध हो तो उसकी पुनरावृत्ति ही तो करते हैं लोग। मैं तो कहता हू अच्छा रहा गांधी मर गया तो। आज होता तो उसको आत्महत्या करनी पडती।'

दूसरा एक— ठीक कहते हो सुनता है कोई विनोबा की। दाश निकला की चादर ओढे फिरता है बेचारा। सरकार का यस मन है नही तो दूध की मक्खी की तरह बाहर होता कभी का।'

इतने म एक युवा विद्यार्थी बोल उठा। दाढी मूछ हडताली नेता की सी बढी हुई। हाथ म अंग्रेजी का अखबार था। "सत्ता लिप्सुओं का हाल तो देखो, अहमदाबाद मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ। देश म गरीबी, बेरोजगारी मिटाने के लिए ढेरों प्रस्ताव पास कर दिए। जब तब सत्ता म थे तब तक चोर चोर मौसेरे भाई अलग हो गए तो अपनी ढपली अलग। स्पेशल ट्रेनें विशाल पण्डाल और न मालूम क्या-क्या यह सब पैसा गरीबों के आवास म क्यों नहीं लगाया—दो दिन के नाटक के लिए लाखों स्वाहा कर देते हैं और दुहाई देते हैं गांधी की।"

ज्योंही उसने बात समाप्त की दूसरा लपककर बोला 'बम्बई जाते तो मालूम पडता अधिवेशन का। बडे नेताओं के रईसी आवास भव्य पण्डाल—और अहमदाबाद से हर बात म दो कदम आगे। कहते हैं—उन दिनों वहा शराब की बिक्री और दिनों से अधिक थी। दोनों ही आर्थिक क्रान्ति लाने का दावा करते हैं। सुनहले रुपहले भाषण सुनते तो तबियत खुश हो जाती, मगर गरीबी हटाने से उनका कोई मतलब नहीं। ले लख, तो ले दो लख वाली बात थी वहां।'

इतने में एक वृद्ध सज्जन ने कहा, 'अभी पटना में क्या हुआ था ?¹ वह तो अधिवेशन का बाप था। जनता को सब ठगना चाहते हैं कोई गांधी के नाम पर कोई मार्क्सीयरूप के नाम पर और कोई क्रान्ति के नाम पर। गरीब की पीड़ा प्रस्तावों से नहीं मिटती। सत्ता के लिए सब साठ गांठ समझौता कर सकते हैं—जनता मरे जिए देह क्या सिद्धांत भट्ठी में पड़े—कुर्सी जिन्दाबाद—यह जानते हैं ये लोग।

एक महाशय देवर्षि से बोले, 'बाबा आप भी तो बोलो कुछ आप भी हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि हैं।'

"भाई मेरी समझ में तो इतना ही आता है कि जनता पटरियां हैं जिस पर मन्त्रियों की भीड़ भरी गाड़ियां दौड़ रही हैं और पटरियां का जीवन खोखला हो रहा है इसलिए ये सारी दुर्घटनाएं हो रही हैं—पटरियों का ध्यान पहले होना चाहिए—गाड़ियां का बाद में।' देवर्षि ने कहा।

"जीते रहो बाबा आओ बैठो, थक गए होंगे आप, एक मनचला युवक ने कहा।

दूसरा युवक—' अरे भाई आज तो सारा डिब्बा संसद भवन का अधिवेशन बन गया है और यह सारी रेल देश के जनमानस का स्वरूप।'

इतने में ही टी० टी० आ गया। विद्यार्थी युवक से— टिकट!'

'नहीं है।"

'बनवाओ।

जरूरी नहीं है।'

'क्या ?"

जब तुम्हारे साले के लड़के की बरात में पच्चीस आदमी फ्री चल सकते हैं और सिपाही और तुम्हारे चिपटी चिपटी में दस-बीस आदमी योंही बैठ सकते हैं तो दो आदमी हम भी चल सकते ।'

क्या काम करते हैं आप ? टी०टी० ने पूछा मगर मुंह उसका

---

१ जनसंघ का वार्षिकोत्सव अधिवेशन चाणक्य नगर पटना।

देखने लायक था।

'कॉलिज में पढ़ते हैं।"

'अच्छा!" वह बैठ गया, उसने किसी से टिकट नहीं मांगी। जंक्शन आ गया। लोग उतरने लगे। देवर्षि और बापू भी उतर गए।

शहर में प्रवेश किया। सूर्यास्त हो रहा था। दुकानें बन्द थीं। मालूम हुआ कल से हड़ताल है। पुलिस के लाठी चार्ज से दो आदमी मारे गए थे। देवर्षि बोले 'बापू आप कहते थे हड़तालें वर्तमान असन्तोष की निशानी है सबके दिलों में एक धुंधली-सी आशा बंधी है। यदि यह निश्चित रूप धारण नहीं करेगी तो लोगों को बड़ी निराशा होगी।"

बापू ने आंखों से समर्थन किया। तिमंजिले मकान के एक भव्य कमरे में चले गए। टेलीफोन पड़ा था देवर्षि ने उठाया, बोले, 'हैलो टू फिफ्टी फाइव पर बात करना चाहता हूं।

लाइन जुड़ गई। हैलो मन्त्री साहब हैं?'

आवाज आई, हां हैं आते हैं अभी।' 'थोड़ी देर बाद बोलिए' सामने से किसी ने पूछा।

नमस्कार साहब मैं कृष्णदास हूं।' देवर्षि बोले।

अच्छा आ गए आप? कहिए।"

उस केस का क्या हुआ साहब?"

'अरे होना-जाना क्या था, चीज तो आपके घर पहुंच ही गई केस भी दस पांच दिन में रफा-दफा हो जाएगा।

उस ठेके का?

'परसों तक हो जाएगा पर इस सम्बन्ध में कल तक मिला एक बार।

'अच्छा साहब, धन्यवाद।

'बापू, यह कृष्णदास पांच सात वर्ष पहले सामान्य आदमी था। अब कलकत्ता, बम्बई राजस्थान कई जगह इसके बड़े बड़े आफिस हैं फैक्टरियां कारखाने हैं। गत चुनाव में इसने इसी मन्त्री को कई लाख लगाकर चुनाव जिताया था। अब लाइसेंस, परमिट कोटा, ठेके

सब कुछ से बढ़कर हज़ार गुना कमाएगा। पर कल्याण मरता है तो हरिलाल, घनश्यामलाल और गिरधरलाल की कोई नई टोली खड़ी हो जाती है। सब मानो यह टोली अब था बनकर राजनीति में हो गया, यह गलती है उसे जुड़ना चाहिए था सार्व कल्याणकारी धर्मनीति से इसलिए देश में बेचैनी की हवा गर्म है।' बापू ने नयन बन्द कर प्रार्थना की मन ही मन।

तमसो मा ज्योतिर्गमय' और फिर दोनों बाहर आ गए।

१२

रात्रि के छह सवा छह बजे थे। अधे राज्य म अयाय की तरह कार उतर रहा था। आकाश पर फले हल्के श्यामल बादलों न पद प्सु सरकार के भ्रष्टाचार की तरह उस और गहरा कर दिया था र सड़कों पर रोशनी थी और शहरी अचल का अधकार परास्त- प्रतीत होता था।

देवर्षि बडो थकन अनुभव कर रह थे। बोले, बापू, बाजार चल र कहीं दुग्ध पान की इच्छा है।' 'बहुत अच्छा' बापू ने कहा। योंही उन्होंने बाजार की ओर मुख किया सहसा बापू बोल देवर्षि ह नाली क बाइ ओर कौन पडा है कुत्ता पेशाब कर रहा है उस पर ख तो।

दर्वपि यह तो कोइ शराबी है मालूम पडता है ज्यादा पी ली है दसन।'

पढा लिखा मालम पड़ता है।

कोट पण्ट है इसलिए?

नहीं किताब और नोट बुक भी तो उस तरफ पडे है।'

आजकल पठित वग म भी इसका प्रचार बहुत बढ रहा है बापू।'

हे राम!

गौर से देखकर देवर्षि ने कहा 'ओह बापू, इसको तो हमने उस कवि सम्मलन म देखा था कैसा सुरीला कविता पाठ कर रहा था?"

गला सुरीला जरूर होगा, मगर जीवन सुरीला नहीं है ।

ऐन्द्रिकता उत्पन्न करने वाली कला विनाशगामी

के लिए अभिशाप।'

लेकिन बापू ऐन्द्रिकता बढाने वाली कला का आज की ट्रिजडी सभ्यता तालियों की गटगडाहट म बस मोर से अभिनन्दन करती है।

और फिर उस पागल गटगडाहट मे, ऐन्द्रिकता से चिपटकर नग्न यथाथ म वह जीवन खोजता है और अति यथाथ म वह शराब की शरण लेता है। वह नग्न यथाथ आप देख ही रहे हैं। देवर्षि जो अन्तर को देखता है बाह्य को नही वही सच्चा कलाकार है।

बातें चल ही रही थी कि सहसा एक युवक पास आकर रुक गया। वह पर्याप्त चिन्तित और परेशान प्रतीत होता था। ज्यो ही वह चलने लगा। देवर्षि बोले, कहा से आ रहे हो नौजवान ?'

गाधी मार्केट स।

वहा कोई धन्धा करते हो ?'

नही बाबा, वहा अपने एक पडोसी को खोजने गया था मिला नही।

वहा कुछ दूध मिल सकेगा ?'

दूध ! '

'क्या भाई, आश्चय कसे ?

गाधी मार्केट म दूध दही का काम ही क्या ? या फिर कबीर की उलटवासियो की तरह आपका मतलब और किसी से है ?'

'क्या मतलब भाई ?'

मतलब शराब।

अरे राम राम ! हम साधु और शराब—क्या सुना रहे हो भाई ?

बापू बोले गाधी मार्केट म शराब भी मिलता है ?"

शराब ही नही मास भी।'

'मास भी ? राम राम।

मास भेड-बकरी का ही नहीं, गाय तक का भी।

राम राम, तो फिर हमें नहीं जाना है उधर।

"अरे बाबा राम राम क्या करते हो। गाधी मार्केट गाधी होटल, और गाधी भण्डार का तो बोलबाला है आजकल। खूब मिलावट खूब घोटाला। चादी है लोगो की। मरने को गरीब थोडे हैं?

'कैसे भाई?

'कस क्या? आटा तेल मिर्च मसाले और यहा तक कि दवा भी शुद्ध बहुत कम मिलती है। गरीबो को पोषण तत्त्व तो यो ही नही मिल पाते और ऊपर से य अखाद्य। वेरी वेरी टी० बी० कैसर य मुनाफाखोर गरीबो को पैसा लेकर बाटते हैं।"

'हे राम! और सरकार कुछ नही करती?'

"बाबा यह सब मत पूछो यहां तो कुए म ही भाग पड गई है।' कहकर युवक जब रवाना होने लगा तो देवर्षि ने कहा भाई उदास और चिंतित दिखाई पडते हो?'

क्या बताऊ बाबा, पडोसिन का लडका है, चपरासी था किसी दफ्तर म पहले रोज पीता है गाधी मार्केट की तरफ मिले तो, नही मिला। मा उसकी ताग से कुचल गई। हास्पीटल म दाखिल करवाया है उसको। कहती है एक बार उसे मिला दो। पाच बजे एक मत बच्चा हुआ था उसके उसे मिट्टी देने वाला कोई नही था—देकर आया बाबा—अब चिन्ता है कही डाक्टरी का दीपक बुझ न गया हो। स्त्री भी एक अधेरी कोठडी म भूखी प्यासी पडी है—बडी मुसीबत है—जा रहा हू।

बापू ने एक लम्बी सास ली, बोले, मैं भारत का गरीब होना पसन्द करूगा लेकिन मैं यह बर्दाश्त नही कर सकता कि हमारे हजारो लोग शराबी हो। अगर भारत मे शराबबन्दी जारी करने के लिए लोगो को शिक्षा देना बन्द करना पडे तो कोई परवाह नही यह कीमत चुका कर भी शराबखोरी बन्द करनी चाहिए।[१]

लेकिन बापू सरकार कहती है शराब निषेधाज्ञा से उसकी अतिरिक्त आमदनी मारी जाती है इससे राष्ट्र को आर्थिक हानि होती है।'

---

१ यग इण्डिया १५ ६ २७

'यदि मुझे एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय, तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दुकानों को बिना मुआवजा दिए बन्द करवा दिया जाए और कारखानों के मालिकों को अपने मजदूरों के लिए मनुष्योचित परिस्थितियां निर्माण करने तथा उनके हित में ऐसे उपहार गृह और मनोरंजन गृह खोलने के लिए मजबूर किया जाए जहां मजदूरों को ताजगी देने वाले निर्दोष मनोरंजन प्राप्त हो सकें।'[1]

बापू एक ओर देश में सुरा का बढ़ता प्रसार और दूसरी ओर लोभी लोगों द्वारा मिलावट का घृणित व्यापार—एक में सुराकर लुटते हैं लोग, दूसरे में खाकर मरते हैं लोग—दुखद स्थिति है यहां की।

मूल बात तो यही हुई भगवन्! कि लोग पीकर भी प्यासे हैं और खाकर भूखे। ऐसे भूख-प्यासे और रोगी राष्ट्र की कल्पना तो मैंने स्वप्न में भी नहीं की थी। हे राम! फिसलते राष्ट्र का तू ही मालिक है अब।'

---

१ यंग इण्डिया २५ ६ १

१३

"बापू! अब तो महानगरों का पाखण्ड देखते-देखते ऊब गया हूं।

"और?"

"गावों की दुर्दशा का बोझ ढोते थक भी गया हू।"

"तो चलें अब?"

"बस एक इच्छा और है।"

"वह?"

"पाकिस्तान दर्शन की। भारत म तो मेरी आशा दुराशा मात्र ही रही—शायद भारत के उस भाग—पाकिस्तान म वह कुछ फलवती नजर आए। मातृभूमि की जिस कृतज्ञता का विस्मरण कर जिन धर्मान्ध लोगो ने विभाजन करवाया था कम से कम वे लोग तो सुखी-सम्पन्न होंगे ही। चलो उनसे कुछ सन्तोष मिले वह भी अच्छा। आखिर वे भी तो इसी मा के बेटे-बेटी हैं।

लेकिन वहा जाने के लिए पासपोर्ट जो लेना होगा।

बापू एक बार मुस्करा दिए। बोले "पासपोर्ट लेनेवाला गाधी तो मर गया कभी का और इसीलिए मरा क्योंकि उसे पासपोर्ट की जरूरत थी। इसके लिए याद हो आपको तो प्रस्थान करते समय मैंने आपको कहा था कि—एक अधूरी लालसा जो आज भी मेरे हृदय म अन्तर्व्रण की तरह चिपकी हुई है।

"हा हा, कहा था बापू।"

"आज मैं उसी कथनी को क्रिया रूप देकर उसके मर्मिनाश स

मुक्त होना चाहता हूं।

भला ऐसी क्या कथनी थी आपकी ?"

मैंने कहा था मैं अपने मुसलमान भाइयों से मिलने जाऊंगा तो क्या मैं पासपोर्ट पर रुकने वाला हूं। वे तो मेरे भारत के मां जाए हैं हुकूमतें ही दो हुई हैं—दिल तो दो नहीं हो गए।'

यह आपने कैसे कह दिया था बैरिस्टर होकर ?

"दिल की एकता पर।

'लेकिन दिल की एकता राजनीतिक कानूनों में कीमत नहीं रखती।'

तभी तो इतने वर्षों बाद, वह पूरी होगी—अब मैं एक देशीय नहीं रहा—सीमातीत हूं।'

उन्होंने ज्योंही सीमा में प्रवेश किया एक संतरी ने टोका 'साधु लोगो! पासपोर्ट कहां है ?'

'पासपोर्ट तो नहीं है।' बापू ने सहज ही में जवाब दिया।

'ध्यान है पाकिस्तान है यह ?'

'पाकिस्तान तो पहले भी था अब भी है पहले भी नहीं था, अब भी नहीं है।'

"समझ में नहीं आता क्या कहते हो ?"

"तुम लोगों की समझ में पहले भी नहीं आया अब भी नहीं आता, इसमें मेरा क्या दोष ?'

क्या कहा था पहले तूने ?

'यही कि पाकिस्तान एक ऐसा असत्य है जो टिक नहीं सकता। ज्योंही इस योजना के बनाने वाले इसे अमल में लाने बढ़ेंगे, उन्हें पता चल जाएगा कि यह अमल में लाने जैसी चीज नहीं है।'[1]

बढ़ते हुए बापू को संतरी ने जोर से कहा रुक जाओ, मैं कहता हूं।' बापू धीरे धीरे आगे कदम रखते गए। संतरी ने हवा में मुक्का तानते हुए दे मारा। वह पास की दीवार से टकराया—या अल्लाह

---

१ हरिजन सेवक १८-५-४० पृष्ठ ११३

वह चिल्लाया।

' ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान —भाई तुम्हारे य अस्त्र शस्त्र हम लोगो पर काम नही करत। हम यहा जासूसी करने नही जा रहे हैं भाई हम तो तुम्हारे ही हैं। सारा ससार ही हमारा घर है। कहते हुए वे बहुत आगे आ गए।

दो बूढे मुसलमान हुक्का गुडगुडाते हुए एक खेत की मेड के सहारे दिखाई पडे।

'क्या बाबा यह खेत आपका है ? बापू ने पूछा।

नही,' उनम से एक बोला।

'आप लोग फिर क्या धन्धा करत हैं ?'

'क्या करत हैं भाई जिन्दगी के दिन काटते हैं किसी तरह।"

क्यों भाई ऐसी क्या बात है ? आप लोगो के तो अमन-चैन हैं। जब स आपका नया मुल्क बना है।'

"अल्लाह का नाम लो क्या कहते हो आप ?'

क्या ?"

' दिल्ली के पास गाव था भाई दो खेत थे। गाए भैंसें थीं। यमुना की हरियाली म खेलना, और दण्ड निकालने थे सुबह शाम। मजहबी रग म रगकर भाग आए यहा। दो लडके थे फौज म भर्ती हो गए। चार साल पहले लडाई हुई हिन्दुस्तान के साथ—मारे गए दोनो। घर वाली गुजर गई पहले ही—अकेला दिन काटता हू किसी तरह से।'

युद्ध हुआ था हिन्दुस्तान स—भाई भाई आपस मे ?'

'और दूसर के लिए तैयारी हो रही है जोर शोर से।

जगखोर लोगो के हाथ म शासन है। दूसरा जो अब तक चुप था—मौन तोडत हुए बोला।

तो आप लोग सुखी नही हैं यहा ?'

'भाइ आम लोगो ने जिस चीज को बनाया नहीं वहा आप आदमी सुखी कस रहेगा भला ? बाईस साल हो गए यहा चुनाव ही नहा हुए अभी।'

पहला— बन्दूक के बल शासन चलना है। यहा लोगो के दिलो

तरह पारदर्शी है। पढ लिखे बेईमान कूटनीतिज्ञों से ये लोग गुन अच्छे लगते हैं मुझे।

'लोग चन्द्रमा के धरातल की चिन्ता करते हैं और धरती के कोटि कोटि हँसते चाद, अन्न-वस्त्र के अभाव म तडप रहे हैं। क्या पहेली है, हे राम!'

'बापू अब हम उत्तरी ध्रुव स ऊपर उठ रहे हैं।"

बापू ने धरती माता को प्रणाम किया, और फिर एक बार रघुपति राघव राजाराम सबको सन्मति दे भगवान की मधुर ध्वनि आकाश म बिखर गई।

प्रेत मे एक खुला खत

मेरे देश के लोगो!

लगभग बाईस साल बाद आप लोगो से मिलने आया। आने की कोई खास ऐसी लालसा तो नही थी जो मुझे बेचैन करती। इसका मतलब यह नही कि मातृभूमि के प्रति मुझमे कोई लगाव ही न था बल्कि इसलिए कि अब तो देश की व्यवस्था का भार आपके अपने ही मजबूत और जिम्मेदार हाथो म है इसलिए खुशहाली वहा किनारा से ऊपर बहनी चाहिए—मैं इसी कल्पना म निश्चिन्त था। लेकिन जब अधिक कहा गया मुझे कि, 'आपकी शताब्दी मनाई जा रही है चलना होगा आपको' नेकी और पूछ पूछ फिर टालने का सवाल ही नही था। निस्सन्देह मातृभूमि के दर्शन से मैं कृतकृत्य हो गया पर उसके बेहाल से मेरा रोम रोम रो उठा और दिल बेहद पीडा से भर गया। मैं आपको सही बयान करता हू कि कई बार मुझे ऐसा भ्रम हो गया कि मैं मार्ग से भटककर कहीं कुम्भीपाक के किसी भाग मे तो नहीं आ गया हू। दुख की चरम सीमा पर ऐसा हो जाना अस्वाभाविक नहीं। देशवासियो! मैं बडी भारी उत्सुकता लेकर आया था पर मुझे यह स्वप्न म खयाल नही था कि बेबस होकर मुझे अपनी उस प्यारी उत्सुकता का श्राद्ध यहा अपने ही हाथो स करना होगा।

मैंने सोचा था कि स्थूल गांधी चल बसा तो क्या हुआ वह तो मरता

अपरिहाय था आज या कल इसम किसी का क्या वश लकिन नतिक गाधी को कम से कम इतना जल्दी आप लोगो ने नही मरने दिया होगा—मैं अब भी आप लागा मे उस मूर्तिमन्त देखूगा लकिन मैंने पाया यह कि कुछ लोगा न अपनी शारीरिक भूख के कारण मेरी आशा के विपरीत एकदम उल्टा काम किया है। उन्होंने गाधी की लाश को जीवित रखन का पागल प्रयत्न किया है—उस लाश को पत्थर और फौलाद में ढालन हेतु करोडो रुपए खच किए हैं। उन पसा म नग हाल गरीबा की दशा सुधारी जाती, उनकी साफ-सुथरी कही बस्तिया बसाई जाता तो कितना अच्छा होता लेकिन एसा हुआ नहीं! उन लोगा को जितनी राजघाट, विजय घाट और शान्तिवन की स्थल सजावट की चिन्ता है उतनी गरीबा की नही। वे लोग नैतिक गाधी की हत्या करने म जुटे हैं—ऐसी हत्या कि माना उसकी चेतना स्थूल स ऊपर कभी उठे ही नही। पर ऐसे लाग यह नहीं समझते कि हर हृदय मे एक सत्या-वेषी गाधी हाता है जिसको वे लिप्साओं के मोहक आवरण डालकर अधा कर दते हैं उस जीभ काटकर गूगा कर देते हैं। वह गाधी इस तरह मर ता नहीं सकता लेकिन अधे और वाणीहीन का उपयोग के अथ म क्या मान? एम लोग यह नही जानते कि यह उनकी अपनी हार है और देश की रीढ पर एक करारी चोट।

मैं देश म जितना बन सका घूमा फिरा लोगा से मिला भी। मैंने देखा कि दश के बहुसख्यक गाव और गरीबा की हालत बद से बत्तर हुई है। बेराजगारी उन पर हावी है। रोटी और कपडा मुश्किल है उनको। एसी अवस्था म आजादी का क्या मतलब? जब तक एक भी श्रमक्षम आदमी एसा हो जिस काम न मिलता हो या भोजन न मिलता हो तब तक आराम करने वालो या भर पेट भोजन क करन वाला को शम महसूस होनी चाहिए। गुलामा की प्रदशनिया लगती हैं और इसान के गुलाब मुरझाते हैं।

इसके विपरीत धनवाना के ढर अधिक ऊचे और उनकी लालसा का विस्तार अधिक हुआ है। उदारता उनकी सकुचित हुई है। खादी और चर्खे का आस्था की हत्या म उनका पूरा हाथ है। वे सोचते हैं,

जिधर हवा का रुख उधर हमारा मुख दिल्ली का बादशाह हमारा बादशाह। अपने ही मुल्क में वे किस माने में ऐसा सोचते हैं वे ही जानें, देश के सुख दुख से उनका सम्बन्ध तो होना ही चाहिए। व्यापार का मतलब यह नहीं कि जीवन की निहायत जरूरी चीजें घी तेल आटा, दाल, मिर्च-मसाले बिना मिलावट के मिलें ही नहीं। करोड़ों लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ करना घोर अपराध समझा जाना चाहिए।

सत्ता की आसक्ति ने शासकों की नजर इतनी कमजोर कर दी है कि उन्हें अपनी कुर्सी से आगे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। वे गुट बनाने बिगाड़ने में लगे हैं। वे नहीं जानते कि सिण्डीकेट और इण्डीकेट का कोई अन्त नहीं होता। इन चुने हुए लोगों ने 'राष्ट्र हित की रामनेमी' ओढ़कर जनता के हितों को लूटा है और उनके विश्वास की हत्या की है।

हर राज्य ने अपने ही भीतर मोर्चे खोल रखे हैं—अपने ही लोगों के साथ। शक्ति परीक्षण कहा जाता है उसे लेकिन इससे शक्ति के पर टूटते हैं—वे जरा भी नहीं सोचते। आत्मदाह होते हैं छोटी छोटी बातों के लिए। जगह-जगह बर्लिन की दीवार खड़ी करना चाहते हैं कुछ लोग। मैं नहीं समझा कि बंगाल बन्द, 'असम बन्द' आदि का अपने ही मुल्क में क्या मतलब। आप जानते हैं बन्द का मतलब होता है गति हीन अथवा मरा हुआ—समस्या हल करने के ऐसे तरीके खतरनाक होते हैं।

भाषा विग्रह, साम्प्रदायिक दंगे लूट-खसोट हत्याएं होती हैं लेकिन यह सब आम लोगों द्वारा नहीं होते करवाए जाते हैं। गुण्डे पालते हैं कुछ लोग, कुछ किराये पर लाते हैं ऐसा काम करने वाले गुण्डों से कम खतरनाक नहीं होते भले ही वे कितने ही भद्र वेश में रहें। विदेशी जासूसों का जाल और विघटनकारी तत्त्व यहां कम नहीं। कितने ही बदनीयत लोग और बेईमान उस्ताद यहां दयाराम और साधुराम बनकर मुल्क की पीठ में छुरा भोंकने में लगे हैं।

दिन दहाड़े हीवक लूट जाते हैं। मार-पीट, अश्रुगैस, गोली, लाठी चार्ज पथराव प्रदर्शन और आगजनी की घटनाएं मानो रोजमर्रा की

चीज हो गई है। निश्चय ही इससे मुल्क की ताकत घटती है। इसका मूल कारण मेरी समझ म यही आया कि 'यथा राजा तथा प्रजा । नेता और सत्ता के लोगा का आपसी बर विरोध, पदलिप्सा चरम सीमा पर है। ससद और विधान सभाओ मे आए दिन हाथा पाई हगामे और तू तू, मैं मैं होते है। जब सरकार का आदश ही ऐसा है तो जनता उनका अनुकरण करेगी ही—स्वाभाविक है। ऐसी फूटप्रिय सरकार को अपदस्थ करने के लिए फिर विदेशी लोग यहा पानी की तरह पैसा बहाते हैं ताकि उनका बाजार यहा गम चले।

दशवासियो! आप लोगो ने पढा होगा पानीपत मे सागा हारा बाबर से उस समय जाट सिक्ख मराठे आदि दूसरे लोग अपनी अपनी डफली बजा रहे थे। फल क्या हुआ आप लोग जानते हैं। दासता के घाव अभी पूर सूखे ही नही आप फिर उन्ह कुरेद कर ताजा करने मे लगे हैं। दु ख है इतिहास की ऐसी घृणित घटनाओ की पुनरावत्ति करते हुए आपकी समझ कापती नही।

युवक और विद्यार्थी अलग परेशान हैं, बेकारी और शिक्षाहीनता होने के कारण। उनका मुख पश्चिम की ओर है। विदेशी दिशानिर्देश म उनका विश्वास जम रहा है। उनको मोड दनेवाला यहा ताकतवर नेतृत्व होना चाहिए।

मुझे खुशी है कि देश म सडको की भरमार है लकिन सही सडक आप लागो न छोड दी है। बडे-बडे बाध बने हैं पर बिखरी हुई शक्ति को आप लोग बिल्कुल नहीं बाध पाए हैं। देश मे रेला का जाल बिछा है पर कूटनीति, स्वाथ और भ्रष्टाचार का जाल उसस कई गुना अधिक है। फौलाद के बडे-बडे कारखाने खुले हैं मगर लाखो नगी भूखी पसलिया अब भी कापती हैं। उन्हें फौलाद बनाओ।

मेरे लोगा! मैंने आपको हकीकत का एक शीशा दिखाया है कि आप अपने चेहरों को दखें उसम। आप अपने बदसूरत चेहरो को देखन नापसन्द करें, और शीशे को उलटने की कोशिश करें तो यकीन रखें इससे आपकी सूरत सुधर नही जाएगी।

मरे दोस्त! बूढ़ खान ने आप लोगा की जो तस्वीर खींची है

उससे आप लोगो की आखें खुलनी चाहिए। वस आपने यदि न खोलने की प्रतिज्ञा कर रखी है—यह बात अलग है—भगवान् आपको सद बुद्धि दे।

खुशहाली लडखडा रही है उस आप लोगो के सधे हाथो की जरूरत है। मुझे भय है कि आशीर्वाद के लिए जगी हुई मा की चेतना कहीं अभिशाप बनकर फिर ध्यानस्थ न हो जाए इसलिए एकता के सूत्र टूटने न दें। अन्त म एक बात आपस और कह दू कि यहा आकर मेरा धीरज टूटा अवश्य है पर मैंने उस खोया नहीं इसीलिए कि आपकी सोई शक्ति म मुझे अब भी पूरा भरोसा है। अच्छा, अलविदा।

•